जैन विश्व भारती

(मानवीय मूल्यों को समर्पित संस्था)

मंत्री प्रतिवेदन

2016-2017

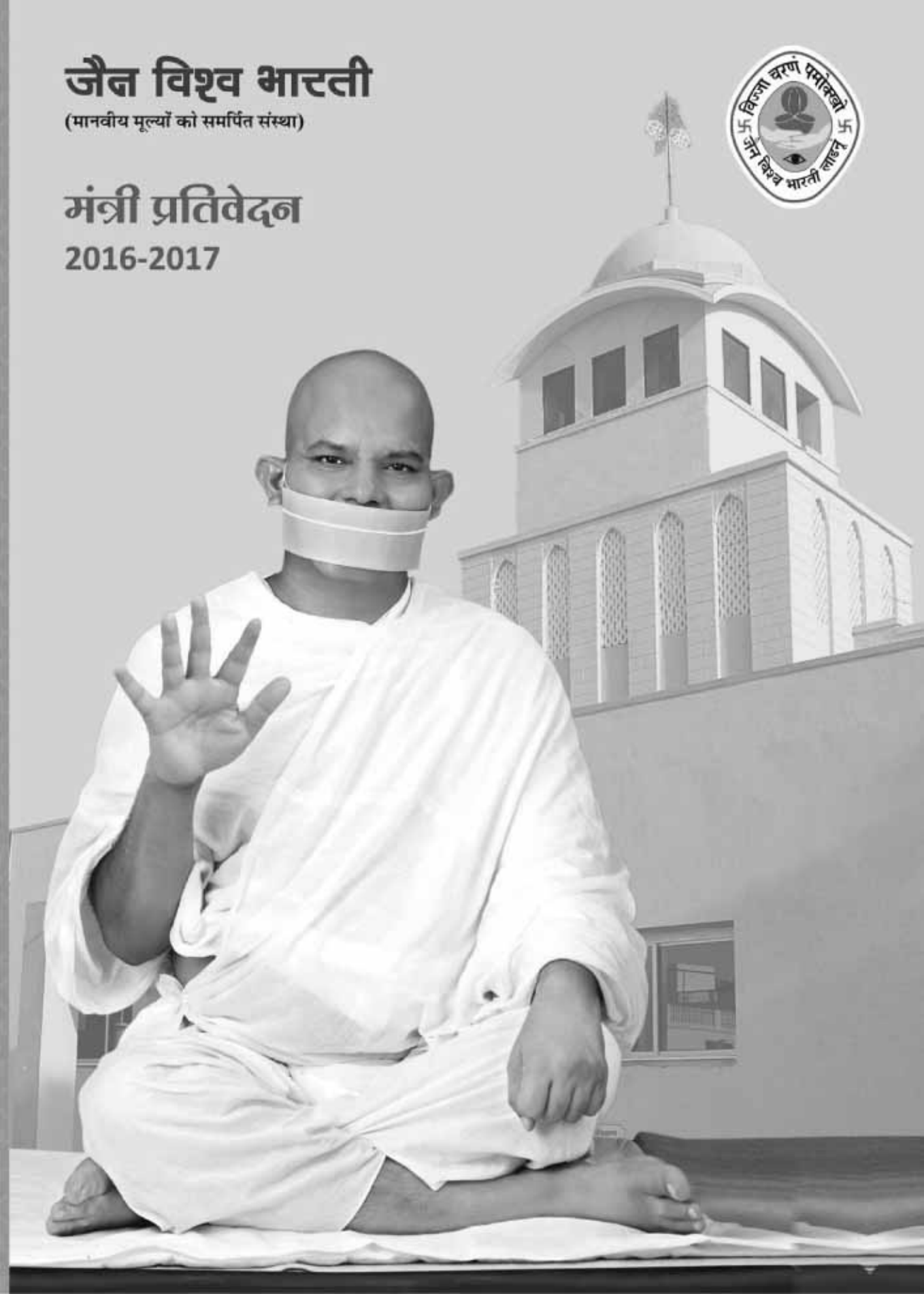

आशीर्वचन

अर्हम्

8 अगस्त 2017

जैन विश्व भारती एक गौरवशाली संस्था है। उसके द्वारा जैन विद्या, शिक्षा, साहित्य, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसी विभिन्न महत्त्वपूर्ण गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का महनीय मार्गदर्शन इस संस्था को प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय उसके साथ जुड़ा हुआ है। लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर मुनिवृन्द, समणीवृन्द और मुमुक्षुवृन्द का भी आवास स्थल बना हुआ है। तेरापंथ समाज मानों इस माने भी भाग्यशाली है कि उसके पास इतनी बड़ी संस्था है। यह संस्था आध्यात्मिक आरोहण करती हुई समाज को आध्यात्मिक पोषण देती रहे। शुभाशंसा।

राजरहाट, कोलकाता

आचार्य महाश्रमण

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं – 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
संपर्क सूत्र : 01581–226025 / 226080 / 224671
E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com

जैन विश्व भारती की 46वीं वार्षिक साधारण सभा की सूचना

मान्यवर,

सादर जय जिनेन्द्र,

जैन विश्व भारती की 46वीं वार्षिक साधारण सभा बुधवार दिनांक 06 सितम्बर 2017 को सायं 4.00 बजे आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, न्यू टाउन, राजरहाट, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) में होगी, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर विचार किया जाएगा–

1. जैन विश्व भारती की 45वीं वार्षिक साधारण सभा की कार्यवाही का पठन और स्वीकृति।
2. जैन विश्व भारती के वर्ष 2016–17 के मंत्री के वार्षिक प्रतिवेदन पर विचार एवं स्वीकृति।
3. जैन विश्व भारती के दिनांक 01 अप्रैल 2016 से 31 मार्च 2017 तक के हिसाब परीक्षक द्वारा अंकेक्षित आय–व्यय लेखा एवं संतुलन पत्र का प्रस्तुतीकरण तथा स्वीकृति।
4. आगामी एक वर्ष हेतु अंकेक्षक की नियुक्ति।
5. आए हुए प्रस्तावों एवं सुझावों पर विचार।
6. विविध– अध्यक्ष महोदय की अनुमति से।

जैन विश्व भारती की वार्षिक साधारण सभा में सभी सदस्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है। कोरम के अभाव में स्थगित सभा उसी दिन और उसी स्थान पर आधा घण्टे पश्चात् आयोजित होगी।

भवदीय

राजेश कोठारी
मंत्री

दिनांक : 28 जुलाई 2017

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष और मंत्री एवं उनके कार्यकाल

अध्यक्ष

क्र. सं.	नाम	कार्यकाल
1.	श्री मोहनलाल बांठिया	1970–72
2	श्री खेमचन्द सेठिया	1972–76, 1984–90
3.	श्री सूरजमल गोठी	1976–79
4.	श्री श्रीचन्द रामपुरिया	1979–81
5.	श्री बिहारीलाल जैन	1981–84
6.	श्री गुलाबचन्द चिण्डालिया	1990–92, 1997–2000
7.	श्री श्रीचन्द बैंगानी	1992–1994
8.	श्री धरमचन्द चौपड़ा	1994–1996
9.	श्री चैनरूप भंसाली	1996–1997
10.	श्री मूलचन्द बोथरा	2000–2002
11.	श्री बुधमल दूगड़	2002–2004
12.	श्री सिद्धराज भंडारी	2004–2006
13.	श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया	2006–2012
14.	श्री ताराचन्द रामपुरिया	2012–2014
15.	श्री धरमचन्द लुंकड़	2014–2016
16.	श्री बी. रमेशचंद बोहरा	2016–2018

मंत्री

क्र. सं.	नाम	कार्यकाल
1.	श्री सूरजमल गोठी	1970–72
2.	श्री महावीरराज गेलड़ा	1972–73
3.	श्री सम्पतराज भूतोड़िया	1973–77
4.	श्री श्रीचन्द बैंगानी	1977–80, 1983–92
5.	श्री श्रीचन्द सुराणा	1980–81
6.	श्री शंकरलाल मेहता	1981–83
7.	श्री झूमरमल बैंगानी	1992–94
8.	श्री ताराचन्द रामपुरिया	1994–96, 1997–2000
9.	श्री हनुमानमल चिण्डालिया	1996–1997
10.	श्री गुलाबचन्द चिण्डालिया	2000–2002
11.	श्री भागचन्द बरड़िया	2002–2004
12.	श्री नरेन्द्र छाजेड़	2004–2006
13.	श्री भीखमचन्द पुगलिया	2006–2010
14.	श्री जितेन्द्र नाहटा	2010–2012
15.	श्री बंशीलाल बैद	2012–2014
16.	श्री अरविन्द गोठी	2014–2016
17.	श्री राजेश कोठारी	2016–2018

जैन विश्व भारती

(सत्र 2016–2018)

कुलपति

श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी	दिल्ली

संचालिका समिति

पदाधिकारी

क्रम सं.	नाम	स्थान	पद
1.	श्री बी. रमेशचंद बोहरा	चेन्नई	अध्यक्ष
2.	श्री धरमचन्द लुंकड़	चेन्नई	निवर्तमान अध्यक्ष
3.	श्री अरविन्द कुमार संचेती	अहमदाबाद	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
4.	श्री जोधराज बैद	दिल्ली	उपाध्यक्ष
5.	श्री ओम जालान	कोलकाता	उपाध्यक्ष
6.	श्री तनसुख नाहर	चेन्नई	उपाध्यक्ष
7.	श्री विमलचंद रूणवाल	जयसिंगपुर	उपाध्यक्ष
8.	श्री राजेश कोठारी	चेन्नई	मंत्री
9.	श्री जीवनमल जैन (मालू)	बंगाईगांव	संयुक्त मंत्री
10.	श्री मनोज कुमार दूगड़	कोलकाता	संयुक्त मंत्री
11.	श्री गौरव जैन मांडोत	जयपुर	कोषाध्यक्ष

संचालिका समिति सदस्य

क्र. सं.	नाम	स्थान	क्र. सं.	नाम	स्थान
1.	श्री अभयराज बैंगानी	बीदासर	26.	श्री मालचंद बेगानी	दिल्ली
2.	श्री अजय कुमार जैन (कोचर)	कोलकाता	27.	श्री मनीष गिड़ीया	बैंगलोर
3.	श्री अनिल धाकड़	मुंबई	28.	श्री मनीष कुमार सिंधी	गुवाहाटी
4.	श्री अरविन्द गोठी	दिल्ली	29.	श्री मनोज दूगड़	हैदराबाद
5.	श्री अशोक जैन	पुणे	30.	श्री नरेन्द्र बच्छावत	कोलकाता
6.	श्री अशोक पारख	सिलीगुड़ी	31.	श्री नरेश कुमार मेहता	जयपुर
7.	श्री बी. केवलचंद मांडोत	चेन्नई	32.	श्री नवीन दस्साणी	हैदराबाद
8.	श्री बजरंग कुमार सेठिया	सिलीगुड़ी	33.	श्री नवीन बैंगानी	कोलकाता
9.	श्री दानमल पोरवाल	भिलाई	34.	श्री निर्मल भंसाली	मुंबई
10.	श्री दीपचन्द नाहर	बैंगलोर	35.	श्री नितेश बैद	दिल्ली
11.	श्री धरमचंद धाड़ेवा	कोलकाता	36.	श्री पन्नालाल पुगलिया	जयपुर
12.	श्री जी. गौतमचंद धारीवाल	चेन्नई	37.	श्री प्रमोद जैन	बरवाला
13.	श्री हनुमानचंद लुंकड़	सिन्धनूर	38.	श्री प्रवीण बरड़िया	लाडनूं
14.	श्री हेमराज श्यामसुखा	बैंगलोर	39.	श्री प्रवीण कोठारी	चेन्नई
15.	श्री जयभगवान जैन	कैसिंगा	40.	श्री राजेश एम. जैन मरलेचा	चेन्नई
16.	श्री जितेन्द्र पुगलिया	कोयम्बटूर	41.	श्री राकेश कुमार भंसाली	कोलकाता
17.	श्री कमलचंद टी. बैद	मुंबई	42.	श्री रमेशकुमार जसराज बालड़	इचलकंरजी
18.	श्री कपूरचंद श्रीश्रीमाल	मुंबई	43.	श्री संजय भंसाली	सूरत
19.	श्री केवलचंद जैन	रायपुर	44.	श्री शैलेन्द्र बोरदिया	भीलवाड़ा
20.	श्री लुणकरण छाजेड़	गंगाशहर	45.	श्री सुभाष भूरा	भुवनेश्वर
21.	श्री मदनचंद दूगड़ 'जौहरी'	मुम्बई	46.	श्री टी. अमरचंद लुंकड़	चेन्नई
22.	श्री महावीर बी. सेमलानी	सूरत	47.	श्री विजय कुमार सेठिया	चेन्नई
23.	श्री महावीरचंद गादिया	बैंगलोर	48.	श्री विमल कटारिया	बैंगलोर
24.	श्री महावीरचंद सकलेचा	पाली	49.	श्री विमल के. सेठिया	चेन्नई
25.	श्री महेन्द्र सेठिया	चेन्नई			

न्यास मण्डल

क्रम सं.	नाम	स्थान	पद
1.	श्री पुखराज बडोला	चेन्नई	मुख्य न्यासी
2.	श्री भागचन्द बरड़िया	लाडनूं	न्यासी
3.	श्री भैरूलाल चोपड़ा	अहमदाबाद	न्यासी
4.	श्री डी. गौतमकुमार सेठिया	तिरूवन्नामल्लै	न्यासी
5.	श्री ललित कुमार दूगड़	चेन्नई	न्यासी
6.	श्री महेन्द्र कुमार जैन	बैंगलोर	न्यासी
7.	श्री मनोज लूनिया	शिलौंग	न्यासी
8.	श्री प्रमोद बैद	कोलकाता	न्यासी

पंच मण्डल

क्रम सं.	नाम	स्थान
1.	श्री जे. गौतमचंद सेठिया	चेन्नई
2.	श्री जतनलाल पुगलिया	इन्दौर
3.	श्री रूपचन्द दूगड़	मुम्बई

वित्त सलाहकार

क्रम सं.	नाम	स्थान
1.	श्री टी. अमरचंद लुंकड़	चेन्नई

परामर्शक मण्डल

क्रम सं.	नाम	स्थान
1.	श्री भीखमचंद नखत	हैदराबाद
2.	श्री देवराज नाहर	बैंगलोर
3.	श्री धनराज धारीवाल	चेन्नई
4.	श्री जसवंतराज भण्डारी	चेन्नई
5.	श्री कमलसिंह बैद	जयपुर
6.	श्री एस. प्रसन्नचंद जैन सिंघवी	दिल्ली
7.	श्री संजय दूगड़	बैंगलोर
8.	श्री शांतिलाल बरमेचा	मुंबई
9.	श्री सुमतिचंद गोठी	मुंबई
10.	श्री सुरेन्द्र चोरड़िया	कोलकाता
11.	श्री ताराचंद रामपुरिया	लाडनूं

उपसमिति / विभाग

साहित्य विभाग

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री धरमचंद लुंकड़, चेन्नई	विभागाध्यक्ष
2.	श्री हेमराज श्यामसुखा, बैंगलोर	संयोजक

प्रेक्षा फाउण्डेशन

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री अरविन्द कुमार संचेती, अहमदाबाद	विभागाध्यक्ष
2.	श्री अरविन्द गोठी, दिल्ली	संयोजक
3.	श्री अशोक चिंडालिया, मुंबई	संयोजक
4.	श्री राजेन्द्र मोदी, इन्दौर	संयोजक

समण संस्कृति संकाय

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री मालचंद बेगानी, दिल्ली	विभागाध्यक्ष
2.	श्री पन्नालाल पुगलिया, जयपुर	संयोजक
3.	श्री महेन्द्र सेठिया, चेन्नई	संयोजक, जैन विद्या
4.	श्री महावीर धारीवाल, जालना	संयोजक

शिक्षा विभाग

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री टी. अमरचंद लुंकड़, चेन्नई	विभागाध्यक्ष

जीवन विज्ञान विभाग

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री डी. गौतम कुमार सेठिया, तिरूवन्नामलै	विभागाध्यक्ष

शोध विभाग

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री मनोज लूनिया, शिलौंग	विभागाध्यक्ष
2.	श्री प्रमोद बैद, कोलकाता	संयोजक

विमल विद्या विहार प्रबंधन समिति

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री पुखराज बडोला, चेन्नई	संयुक्त संयोजक
2.	श्री तनसुख नाहर, चेन्नई	संयुक्त संयोजक

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर प्रबंधन समिति

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री रणजीतसिंह कोठारी, कोलकाता	संयोजक
2.	श्री ललित कुमार दूगड़, चेन्नई	सह–संयोजक

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर प्रबंधन समिति

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री गौरव जैन मांडोत, जयपुर	संयुक्त संयोजक
2.	श्री पन्नालाल पुगलिया, जयपुर	संयुक्त संयोजक

परिसर निर्माण कार्य समिति

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री जोधराज बैद, दिल्ली	संयुक्त संयोजक
2.	श्री जी. गौतमचंद धारीवाल, चेन्नई	संयुक्त संयोजक
3.	श्री प्रमोद जैन, बरवाला	सह–संयोजक

कानूनी सलाहकार समिति

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री अशोक कुमार जे. डागा, चेन्नई	संयुक्त संयोजक
2.	श्री जे. गौतमचंद सेठिया, चेन्नई	संयुक्त संयोजक

मीडिया एवं प्रचार–प्रसार विभाग

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री महावीर बी. सेमलानी, सूरत	संयोजक
2.	श्री संजय कुमार वेदमेहता, इचलकरंजी	सह–संयोजक

तुलसी कला दीर्घा

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री महेन्द्र कुमार जैन, बैंगलोर	संयुक्त संयोजक
2.	श्री कमलचंद टी. बैद, मुंबई	संयुक्त संयोजक

पुरस्कार नियोजन समिति

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री धरमचन्द लुंकड, चैन्नई	सदस्य
2.	श्री जे. गौतमचन्द सेठिया, चैन्नई	सदस्य
3.	श्री विजय कुमार सेठिया, चैन्नई	सदस्य

विशेष : उक्त सभी विभागों/समितियों में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष एवं मंत्री पदेन सदस्य हैं।

अध्यक्ष की कलम से

महातपस्वी शांतिदूत परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी, मातृहृदया साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, मुख्य मुनिश्री महावीरकुमारजी, मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी, जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं समस्त चारित्रात्माओं को सविनय वंदना।

दिनांक 24 सितम्बर 2016 को धारापुर, गुवाहाटी (असम) में आयोजित जैन विश्व भारती की 45वीं वार्षिक साधारण सभा के अवसर पर परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की दृष्टि के अनुसार जैन विश्व भारती के अध्यक्ष पद पर निर्वाचन के साथ मुझे तेरापंथ धर्मसंघ की इस गरिमापूर्ण संस्था में सेवा का सुअवसर प्राप्त हुआ। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन आशीर्वाद के साथ दिनांक 04 अक्टूबर 2016 को मैंने जैन विश्व भारती की नव निर्वाचित एवं नव मनोनीत टीम सहित जैन विश्व भारती सचिवालय, लाडनूं में दायित्व ग्रहण किया।

एक ओर जहां जैन विश्व भारती पर परमपूज्य आचार्यप्रवर के असीम अनुग्रह एवं निवर्तमान अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़ के गत द्विवर्षीय कार्यकाल की अनेक उपलब्धियों का रेखाचित्र मेरे मानस पटल पर प्रेरणा के प्रतीक के रूप में अंकित था, वहीं दूसरी ओर संस्था के विकास की असीम संभावनाओं का खुला आकाश मेरे सामने था। जहां एक ओर जैन विश्व भारती जैसी विशाल संस्था के कुशल नेतृत्व की कसौटी सामने थी, वहीं दूसरी ओर गुरु कृपा से ऐसी गरिमामय संस्था के अध्यक्ष के रूप में संघ सेवा के अपूर्व अवसर प्राप्ति की प्रसन्नता और सौभाग्य का क्षण सामने था। परमपूज्य आचार्यप्रवर की कृपादृष्टि और पावन आशीर्वाद से मैं पूर्ण रूप से निश्चिंत एवं आश्वस्त था।

मेरे अध्यक्षीय निर्वाचन के पश्चात् पूज्यप्रवर ने मुझे जैन विश्व भारती के लिए नियमित दायित्वों के साथ मुख्य रूप से दो दायित्वों के लिए इंगित प्रदान करवाया– (1) जैन विश्व भारती की भूमि का वैधानिक औपचारिकताओं के साथ कार्य निष्पादन (2) महाप्रज्ञ वाङमय के कार्य का निर्बाध संचालन। पूज्यप्रवर ने इंगित के साथ ही अपने मंगल पाठ से कार्यों के निष्पादन की ऊर्जा भी संप्रेषित कर दी। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता एवं आत्मतोष का अनुभव हो रहा है कि दोनों कार्य पूज्यप्रवर के आशीर्वाद एवं ऊर्जा संप्रेषण व पूरी टीम के सहयोग से अपेक्षित प्रगति की ओर अग्रसर है।

इस एक वर्ष में मुख्यतः जैन विश्व भारती की गतिविधियों को आगे बढ़ाने का कार्य हुआ, जिसमें उन प्रवृत्तियों के विभागाध्यक्ष, संयोजक, संयुक्त संयोजक आदि का विशेष श्रम व योगदान रहा है। शिक्षा विभाग के अंतर्गत जैन विश्व भारती की तीनों शैक्षणिक इकाईयां शैक्षणिक दृष्टि से गुणवत्ता वृद्धि के साथ आर्थिक दृष्टि से लगभग आत्मनिर्भर बनी हैं। समण संस्कृति संकाय के अंतर्गत जैन विद्या का कार्य नई युगानुकूल तकनीकों के साथ आगे बढ़ा है। प्रेक्षा फाउण्डेशन के अन्तर्गत प्रेक्षाध्यान का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ है, प्रेक्षा वाहिनीयों की संख्या 100 का आंकड़ा पार कर चुकी है। जीवन विज्ञान विभाग के अन्तर्गत जीवन विज्ञान की प्रारंभिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें नवीन परिवेश में तैयार हुई हैं। साहित्य विभाग के अन्तर्गत विभिन्न शीर्षकों से संबंधित लगभग 1 लाख प्रतियों का प्रकाशन हुआ है। 250 से अधिक पुस्तकें ऑनलाईन उपलब्ध कराई गई हैं। शोध विभाग के अंतर्गत कुछ आगमों का प्रकाशन हुआ है तथा अनेक आगमों के पुर्नमुद्रण का कार्य गतिमान है। सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला में नई मशीनों के समावेश के साथ बैंगलोर में एक औषध विक्रय केन्द्र का शुभारम्भ हुआ है। परिसर में 'आनंद निलय' अतिथि गृह का निर्माण कार्य द्रुत गति से जारी है। 108 फीट ऊंचा जैन ध्वज पंच परमेष्ठी के प्रतीक के रूप में स्थापित किया गया है। 200 आंवले के स्थापित नए पौधे आने वाले समय में पेड़ बनकर आगन्तुकों को छाया के साथ आरोग्यता का फल भी प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त भी अनेक कार्य हुए हैं। मंत्री प्रतिवेदन में संपूर्ण वर्ष भर में संपादित कार्यों एवं गति–प्रगति का विस्तृत विवरण आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

जो कार्य हुआ वह पूज्यप्रवर के पावन आशीर्वाद, चारित्रात्माओं के सतत आध्यात्मिक मार्गदर्शन, पूरी टीम के श्रम और संपूर्ण समाज के सहयोग से हो पाया है। कार्यकाल के एक वर्ष की संपन्नता के अवसर पर मैं जैन विश्व भारती की गतिविधियों व संपादित कार्यों की चर्चा न करता हुआ जिनके आशीर्वाद एवं पावन पथदर्शन से तथा जिनके सहयोग व सहभागिता से यह विकास यात्रा संपन्न हो रही है, उन सभी के प्रति कृतज्ञता व आभार के भाव व्यक्त करना चाहूंगा।

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का पावन आशीर्वाद और समय–समय पर प्राप्त प्रेरक पथदर्शन मेरे लिए सतत ऊर्जा का स्रोत बना रहा। पूज्यप्रवर की कृपादृष्टि हेतु सविनय कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, 'मुख्य मुनि' मुनिश्री महावीरकुमारजी, 'शासन स्तंभ' 'मंत्री मुनि' मुनिश्री सुमेरमलजी, मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी एवं 'साध्वीवर्या' साध्वीश्री संबुद्धयशाजी के महनीय मार्गदर्शन हेतु सादर कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी का संस्था की गतिविधियों के विकास व विस्तार में मौलिक चिंतन, सतत प्रेरणा और पावन आध्यात्मिक मार्गदर्शन निरन्तर प्राप्त होता रहा। मुनिप्रवर की उपासना में टीम का कोई भी सदस्य पहुंचता है तो वे किसी न किसी रूप में उस व्यक्ति को संस्था की गतिविधियों से जुड़ने की प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। संस्था की गति–प्रगति के प्रत्येक बिन्दु पर मुनिश्री का श्रम व मार्गदर्शन मुखरित है। मुनिश्री के प्रति अपनी ओर से तथा पूरी टीम की ओर से सादर कृतज्ञता ज्ञापित करता हुआ संस्था को उनके निरन्तर पथदर्शन की मंगलकामना करता हूँ।

प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमणजी, जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी के सतत महनीय मार्गदर्शन हेतु सादर कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। समस्त चारित्रात्माओं एवं समण–समणीवृंद के महनीय मार्गदर्शन हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

सभी सहयोगीगण का नामोल्लेख सहित आभार ज्ञापन मंत्री महोदय ने अपने मंत्री प्रतिवेदन में किया है। अतः मैं संपूर्ण वर्तमान टीम की ओर से जैन विश्व भारती के कर्मठ मंत्री और मेरे परम सहयोगी श्री राजेश कोठारी की निष्ठापूर्ण सेवाओं व सहयोग हेतु हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूँ।

अन्य किसी का नामोल्लेख नहीं करता हुआ सभी पदाधिकारीगण, न्यासीगण, संचालिका समिति सदस्यगण, परामर्शकगण, पंचमण्डल सदस्यगण, पूर्व पदाधिकारीगण, समस्त गतिविधियों/इकाईयों के विभागाध्यक्ष, संयोजक, सह–संयोजक आदि के प्रति आदर सहित हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूँ, जिनके सहयोग, श्रम व सहभागिता से संस्था की गतिविधियों को विकास का नया आयाम प्राप्त हो सका। सभी अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार, जिनके महत्वपूर्ण सहयोग से संस्था की विकास योजनाओं को गति प्राप्त हो सकी। समस्त कार्यरत कर्मीगणों को साधुवाद, जिनके श्रम से संस्था के कार्यों को गति प्राप्त हो सकी। मैं उन सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करता हूं, जिनका ज्ञात–अज्ञात रूप से संस्था के विकास में सहयोग व सहभागिता प्राप्त हुई।

किसी भी प्रकार की हुई भूल के लिए सभी से सहृदय क्षमायाचना करता हुआ सभी के प्रति मंगलकामना करता हूँ।

बी. रमेशचंद बोहरा

जैन विश्व भारती की 46वीं वार्षिक साधारण सभा पर प्रस्तुत प्रतिवेदन

आराध्य के श्रीचरणों में सादर वंदन। परम श्रद्धेय महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के श्रीचरणों में भक्तिभरा वंदन। श्रद्धेया महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, श्रद्धेय 'मुख्य मुनि' मुनिश्री महावीरकुमारजी, श्रद्धेया मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, श्रद्धेया 'साध्वीवर्या' साध्वीश्री संबुद्धयशाजी एवं समस्त चारित्रात्माओं के श्रीचरणों में सविनय वंदन।

जैन विश्व भारती के सम्माननीय कुलपति श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी, सम्माननीय अध्यक्ष श्री वी. रमेशचंद बोहरा, आदरणीय मुख्य न्यासी श्री पुखराज बडोला, सम्मानित पदाधिकारीगण, सम्मानित न्यासीगण, सम्मानित संचालिका समिति सदस्यगण एवं संस्था के सभी सम्मानित सदस्यगण को सादर जय जिनेन्द्र।

'सिटी ऑफ जॉय' के नाम से प्रख्यात कोलकाता महानगर में आयोजित जैन विश्व भारती की 46वीं वार्षिक साधारण सभा पर आप सभी महानुभावों का स्वागत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

जैन विश्व भारती: एक परिचय

आध्यात्मिकतायुक्त आधुनिकता में विश्वास रखने वाले मर्यादित तेरापंथ धर्मसंघ की एक प्रमुख केन्द्रीय संस्था है– 'जैन विश्व भारती', जिसकी स्थापना तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी की पावन प्रेरणा से प्राकृत एवं जैन दर्शन के उच्च स्तरीय शोध संस्थान के रूप में सन् 1970 में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में हुई। जैन विश्व भारती की विविधमुखी गतिविधियों को शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय के रूप में आचार्य तुलसी ने सप्त सकार की संज्ञा दी। इन सात सकारादि प्रवृत्तियों के साथ जैन विश्व भारती अपनी स्थापना के मूलभूत उद्देश्यों के अनुरूप महनीय कार्य कर रही है और आचार्यश्री तुलसी के शब्दों में समाज की कामधेनु के रूप में प्रतिष्ठित है।

मानवीय मूल्यों को समर्पित जैन विश्व भारती एक ऐसा आध्यात्मिक संस्थान है जो आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की ऊर्जा रश्मियों का पुंज है। एक ऐसा बहुमुखी संस्थान है जहां शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय का संगम है। एक ऐसा सुरम्य संस्थान है जो प्राकृतिक सौंदर्य से आपूरित है। एक ऐसा पवित्र संस्थान जो सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक गुणों की त्रिवेणी है। एक ऐसा विशिष्ट शोध संस्थान है जो जैन दर्शन एवं प्राच्य विद्याओं का उच्च स्तरीय अध्ययन व शोध का केन्द्र है। एक ऐसा शिक्षण संस्थान है जहां प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा की समुचित व्यवस्था है। सुरम्य हरीतिमा से सुशोभित परिसर जैन विश्व भारती के बाह्य सौन्दर्य की मुखर कहानी कह रहा है।

जैन विश्व भारती के संरक्षण में पल्लवित–पुष्पित जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) जैन विद्या एवं प्राच्य विद्या के विकास का समुन्नत केन्द्र है तथा संपूर्ण जैन समाज का गौरव व विद्या जगत् के लिए अमर अवदान है। जैन विश्व भारती के अन्तर्गत संचालित विमल विद्या विहार उच्च माध्यमिक विद्यालय, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर एवं महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर से उत्तीर्ण होकर हजारों छात्र–छात्राएं नैतिक एवं आध्यात्मिक परिवेश में शिक्षा प्राप्त कर उच्च शिक्षा एवं सफल कैरियर के लिए तैयार हो रहे हैं। स्वस्थ समाज की संरचना हेतु 'जीवन विज्ञान' को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ समाविष्ट कर जैन विश्व भारती सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। 'समण संस्कृति संकाय' द्वारा जैन विद्या की शिक्षा के अन्तर्गत जैनत्व के संस्कारों के संरक्षण, आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास का अमूल्य कार्य हो रहा है। परिसर में संचालित 'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' द्वारा जन सामान्य की आरोग्य–सेवा में अपना योगदान दिया जा रहा है। संस्था द्वारा संचालित 'प्रेक्षाध्यान' की समस्त गतिविधियां– जिनके द्वारा न केवल भारत के अपितु समस्त विश्व के अनेक अध्यात्म–साधक लाभ प्राप्त कर आत्मिक शांति का अनुभव कर रहे हैं। साहित्य के अन्तर्गत लगभग 600 शीर्षकों से लाखों पुस्तकों का जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशन जैन वाङ्मय के इतिहास में अभिवृद्धि का अमिट चिह्न बन गया है।

जैन विश्व भारती ने अपने प्रथम अनुशास्ता परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी एवं द्वितीय अनुशास्ता परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के सुदीर्घ सान्निध्य एवं पावन पथदर्शन में प्राच्य विद्या, जैन विद्या एवं जैन दर्शन के क्षेत्र में

विकास के अनेक पायदानों पर आरोहण किया। वर्तमान में संस्था अपने तृतीय अनुशास्ता परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक दिशा–निर्देशन में सतत विकास की ओर अग्रसर है।

जैन विश्व भारती के वर्तमान में 1 संस्थापक सदस्य, 31 विशिष्ट सदस्य एवं 1162 आजीवन सदस्य हैं। आलोच्य अवधि में 1 विशिष्ट सदस्य एवं 31 नये आजीवन सदस्य बने। संस्था के वर्ष 2016–17 (आलोच्य अवधि सितम्बर 2016 से जुलाई 2017) की गतिविधियों एवं विकास कार्यों का प्रगति विवरण प्रस्तुत है–

शिक्षा

जैन विश्व भारती की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर हुई थी उनमें से एक मुख्य प्रवृत्ति है– शिक्षा। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु यहां प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक समस्त शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जैन विश्व भारती के संरक्षण में 'जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)' तथा उसके अन्तर्गत 'आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय' एवं जैन विश्व भारती के अन्तर्गत 'विमल विद्या विहार सीनियर सैकण्डरी स्कूल', 'महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर' एवं 'महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर' संचालित हैं।

भावी पीढ़ी में संस्कारों के संरक्षण तथा आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास की दृष्टि से 'समण संस्कृति संकाय' के अंतर्गत जैन विद्या की शिक्षा प्रदान की जाती है।

मनुष्य के बौद्धिक विकास के साथ मानसिक, भावनात्मक और चारित्रिक विकास हेतु आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने 'जीवन विज्ञान' की परिकल्पना की। ध्यान, योग एवं शिक्षण–प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा का यह क्रांतिकारी प्रयोग वर्तमान में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक दिशा–निर्देशन में जैन विश्व भारती के अंतर्गत 'जीवन विज्ञान विभाग' द्वारा साकार हो रहा है।

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)

प्राच्य विद्याओं के अध्ययन, अनुसंधान एवं शोध के साथ जैन दर्शन, अहिंसा, शांति, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से सन् 1991 में स्थापित यह संस्थान एक अनूठे विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ है। जैन विश्व भारती संस्थान अपने अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के महनीय मार्गदर्शन एवं मातृ संस्था जैन विश्व भारती के संरक्षण में शिक्षा, शोध, प्रशिक्षण एवं प्रसार कार्य के क्षेत्र में गति से प्रगति की ओर अग्रसर है। संस्थान की स्थापना के समय स्नातकोत्तर स्तर पर 4 पाठयक्रम चालू थे जो क्रमशः बढ़ते–बढ़ते आज नियमित स्तर पर 42 तथा पत्राचार स्तर पर 17 कुल 59 शैक्षिक (स्नातक, स्नातकोत्तर डिप्लोमा तथा प्रमाण पत्र के) पाठयक्रम चल रहे हैं, जिनमें हजारों की संख्या में विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत पत्राचार के माध्यम से विश्वविद्यालय वर्तमान में स्नातकोत्तर स्तर पर 6 विषयों में एम.ए./एम.एस.सी. का पाठयक्रम संचालित कर रहा है। इसके अतिरिक्त पत्राचार में 7 सर्टिफिकेट कोर्स भी संचालित हो रहे हैं।

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। अपनी स्थापना के 27 सालों के काल में यह विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के उद्देश्यों को पूरा करने में सतत प्रयत्नशील रहा है। मूल्यपरक उच्च शिक्षा एवं महिला शिक्षा को समर्पित यह विश्वविद्यालय अपने लक्ष्य में लगातार सफल रहा है। आज यह पूरे देश में अपनी अलग पहचान रखता है। देश के श्रेष्ठतम 25 निजी/मान्य विश्वविद्यालयों में इसका स्थान 17वां है। इसकी ख्याति सुदूर विदेशों में भी पहुंची है। छह अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ इसका अनुबंध है। जैन विद्या, प्राच्य विद्या, प्राकृत व संस्कृत भाषायें, दर्शन, अहिंसा एवं शांति, योग एवं जीवन विज्ञान, मानविकी आदि में इस विश्वविद्यालय का प्रदर्शन बेहतरीन रहा है। यहां के विषय व पाठ्यक्रम परम्परागत पाठ्क्रमों से कुछ भिन्न होने से ये अपनी अलग विशेषतायें रखते हैं और उनसे इनकी पृथक पहचान बनी हुई है।

संस्थान में इस समय नियमित पाठ्यक्रमों की संख्या 41 और पत्राचार स्तर पर कुल 15 पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं, जिनमें स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा, प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम शामिल हैं। गत शैक्षणिक सत्र में पत्राचार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत 142 परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित परीक्षाओं में 8000 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी, जिनका परीक्षा परिणाम 93.28 प्रतिशत रहा। वर्तमान में शोध कार्यों में 166 शोधार्थी विभिन्न विभागों में अध्ययनरत हैं एवं इस सत्र में 10 शोधार्थियों को पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। अब तक 270 शोधार्थी संस्थान से पीएच. डी की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं।

संस्थान की इस वर्ष की विशिष्ट उपलब्धियां इस प्रकार हैं-

जैन विश्व भारती के तत्कालीन अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़ का सम्मान : जैन विश्व भारती संस्थान के तत्वावधान में सुधर्मा सभा प्रांगण में 17 सितम्बर, 2016 को जैन विश्व भारती के कुलपति श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी व तत्कालीन अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड का उनकी विशिष्ट सेवाओं हेतु सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री राजकुमार रिणवां, रैवासा पीठाधीश्वर श्री राघवाचार्य महाराज, विशिष्ट अतिथि के रूप में लाडनूं क्षेत्रीय विधायक ठाकुर मनोहरसिंह आदि उपस्थित थे।

महिला छात्रावास का जीर्णोद्धार एवं सुविधाओं का समावेश : जैन विश्व भारती संस्थान के आचार्य तुलसी महिला छात्रावास के जीर्णोद्धार कार्य का दिनांक 17 सितम्बर, 2016 को उद्घाटन किया गया। महिला छात्रावास के जीर्णोद्धार का उद्घाटन जैन विश्व भारती के तत्कालीन अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़ द्वारा किया गया।

चार वर्षीय बी.ए./बी.एस.सी.–बी.एड कोर्स का शुभारम्भ : शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान के अन्तर्गत चार वर्षीय बी.ए./बी.एस.सी.–बी.एड. कोर्स का शुभारम्भ हुआ। 10 नवम्बर 2016 को उद्घाटन का कार्यक्रम घोड़ावत ऑडिटोरियम में कुलपति प्रो. बी. आर. दूगड़ की अध्यक्षता में किया गया।

मुनिवृन्द ने किया जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का अवलोकन : जैन विश्व भारती सेवा केन्द्र में विराजित 'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी ने 16 दिसम्बर, 2016 को जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का अवलोकन किया तथा उसके बाद एसडी घोड़ावत ऑडिटोरियम में विद्यार्थियों को उद्बोधन प्रदान किया।

यूजीसी टीम द्वारा संस्थान का अवलोकन : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी), नई दिल्ली की आठ सदस्यीय टीम का दिनांक 19–21 जनवरी 2017 को जैन विश्व भारती संस्थान में प्रवास रहा। उन्होंने संस्थान में विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर यूजीसी टीम के सदस्यों के अलावा जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगण, संस्थान के कुलपति एवं विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष उपस्थित थे।

द्विमाही खेल प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन : जैन विश्व भारती संस्थान में विभिन्न खेलों की टीमें तैयार करने एवं उन्हें राज्य स्तरीय तथा अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतिस्पर्धाओं में भेजे जाने के लिये तैयार करने हेतु खिलाड़ी विद्यार्थियों को विशेष प्रशिक्षण का कार्यक्रम 1 फरवरी से 30 मार्च 2017 तक आयोजित किया गया। बास्केटबॉल, बेडमिंटन, कबड्डी, खो–खो, एथलेटिक्स आदि खेलों के लिये 15–15 दिनों का विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

संस्थान का 27वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित : जैन विश्व भारती संस्थान का 27वां स्थापना दिवस समारोह दिनांक 20 मार्च 2017 को परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती शिष्य मुनिश्री स्वस्तिककुमारजी के पावन सान्निध्य में सुधर्मा सभा, जैन विश्व भारती में मनाया गया। आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रो. भागीरथ सिंह बिजानियां, मुख्य वक्ता के रूप में हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कुलदीपचंद अग्निहोत्री एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में तेरापंथ विकास परिषद् के संयोजक श्री कन्हैयालाल छाजेड़ उपस्थित थे। इस अवसर पर संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं तथा संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के छात्र–छात्राओं ने योगासनों की विभिन्न मुद्राओं का प्रस्तुतीकरण किया।

विविध ग्रीष्मकालीन कक्षाएं आयोजित : मई एवं जून 2017 माह में कॅरियर कॉउन्सलिंग सेल के तत्वावधान में ग्रीष्मकालीन कक्षाएं आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न उपयोगी शॉर्ट कोर्सेज यथा– कुकिंग प्रशिक्षण, डांस, इन्टीरियर डिजाइन, स्पोर्टस् ट्रेनिंग, क्राफ्टिंग एण्ड पेंटिंग, बैसिक कम्प्यूटर, हेयर एण्ड स्किन केयर, स्पॉकन इंग्लिश, योगा व मार्शल आर्ट आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

आचार्यश्री महाश्रमण के जन्मोत्सव पर कार्यक्रम आयोजित : तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें आचार्य एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के तीसरे अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण जन्मोत्सव एवं पट्टारोहण दिवस को दिनांक 04 मई 2017 को विश्वविद्यालय के शैक्षणिक खंड स्थित सेमिनार हॉल में समारोहपूर्वक मनाया गया।

विश्व योग दिवस कार्यक्रम आयोजित : अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिनांक 21 जून 2017 को जैन विश्व भारती स्थित आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षा ध्यान केन्द्र में योग दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जैन विश्व भारती संस्थान एवं जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस उपखंड स्तरीय कार्यक्रम में मुनिश्री स्वस्तिकुमारजी का भी पावन उद्‌बोधन प्राप्त हुआ।

स्मार्ट क्लासेज प्रारम्भ : संस्थान में लगभग बीस कक्षाओं को स्मार्ट क्लास के रूप में अपग्रेड किया गया है। यह स्मार्ट क्लासेज इफेक्टिव व इंटरेक्टिव लर्निंग के लिये उपयोगी साबित हो रही हैं।

डिजिटल लेक्चर सुविधा का शुभारम्भ : जैन विश्व भारती संस्थान राजस्थान राज्य का दूसरा ऐसा विश्वविद्यालय बन गया है, जिसमें आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में डिजिटल स्टुडियो का इस्तेमाल शुरू किया जा चुका है। यह व्यवस्था अब तक केवल ईएमएमआरसी डिजीटल स्टुडियो के रूप में जोधपुर के जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय में उपलब्ध थी। एमिरेट्स प्रोफेसर्स, गेस्ट प्रोफेसर्स, विद्वान समणी वृंद आदि के लेक्चर्स को रिकॉर्डिंग कर उनका प्रभावी उपयोग, भविष्य के लिये इस्तेमाल तथा उन्हें देश के अन्य विश्वविद्यालयों एवं विदेशों में भी उपयोग किया जा सकेगा।

उच्च स्तरीय शोध को बढ़ावा देने के लिये दस लाख तक आर्थिक सहायता: विभिन्न क्षेत्रों में उच्च स्तरीय शोध कार्य को प्रोत्साहन देने के लिये संस्थान द्वारा वितीय सहायता प्रदान की जाने की व्यवस्था की गई है। ऐसे नवाचारी शोध प्रोजेक्ट के लिये कार्यरत शिक्षक, सेवानिवृत्त प्रोफेसर्स, प्रसिद्ध स्कॉलर्स, युवा शोधार्थी, विद्वान अध्येता आदि अपने प्रोजेक्ट संस्थान के विज्ञापन के पश्चात् आवेदन कर सकते हैं। प्रस्तावित प्रोजेक्ट के विषय, विषयवस्तु एवं गुणवत्ता के संबंध में विशेषज्ञों की एक कमेटी निर्णय करेगी तथा उसमें आवश्यक संशोधन किये जाने के लिये निर्देशित भी किया जा सकेगा। इसके लिये शोध कार्य की तीन श्रेणियां निर्धारित की गई हैं। पायलट प्रोजेक्ट के लिये रु. 50 हजार, माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट के लिये रु. 2 लाख और मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट के लिये रु. 10 लाख तक का वितीय सहयोग उपलब्ध करवाया जाएगा।

निःशुल्क योग कक्षाओं का संचालनः संस्थान द्वारा सामाजिक सरोकार कार्यक्रम के तहत शहरवासियों को योगाभ्यास के माध्यम से निरोग एवं स्वस्थ बनाने के उद्देश्य से विगत दो वर्षों से निरन्तर जैन विश्व भारती स्थित आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में प्रतिदिन प्रातः निःशुल्क योगाभ्यास कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें सुयोग्य व दक्ष योग विशेषज्ञों द्वारा आसन, प्राणायाम, ध्यान, यौगिक क्रियाएं आदि करवाई जाती हैं।

प्रो. शास्त्री व डॉ. जैन को राष्ट्रपति सम्मान की घोषणा : संस्थान के संस्कृत प्राकृत भाषा विभाग के प्रो. दामोदर शास्त्री एवं जैन विद्या विभाग के सहायक आचार्य डॉ. योगेश कुमार जैन को महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा महर्षि बादरायण सम्मान देने की घोषणा की गई। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष प्राकृत व पाली भाषा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए यह सम्मान दिया जाता है। यह सम्मान देश के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित विशेष समारोह में प्रदान किया जाएगा। मातृ संस्था की ओर से दोनों महानुभावों को हार्दिक बधाई।

समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी शोध केन्द्र की निदेशक बनी : संस्थान के अन्तर्गत संचालित भगवान महावीर अन्तर्राष्ट्रीय शोध केन्द्र के निदेशक पद पर समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी को नियुक्त किया गया है। समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी वर्तमान में संस्थान के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म एवं दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत है। नए दायित्व हेतु समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी के प्रति मंगलकामना।

शोध पत्रिका 'तुलसी प्रज्ञा' यूजीसी के रेफर्ड जर्नल सूची में शामिल : जैन विद्या एवं प्राचीन विधाओं के शोध के क्षेत्र में नये तथ्यों की खोज एवं उपलब्धियों को प्रस्तुत करने एवं उन्हें बढावा देने के उद्देश्य से संस्थान के अन्तर्गत त्रैमासिक आवृति में 'तुलसी प्रज्ञा' पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा शुरू की गई इस पत्रिका का प्रकाशन सन् 1991 से संस्थान द्वारा लगातार किया जा रहा है। इस शोध पत्रिका को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने अपने रेफर्ड जर्नल की सूची में शामिल किया गया है, जो संस्थान परिवार के लिये गौरव का विषय है।

श्री बसंतराज भंडारी की संस्थान के कुलाधिपति पद से सेवानिवृत्ति एवं श्रीमती सावित्री जिन्दल की संस्थान की छठीं कुलाधिपति के रूप में नियुक्ति : संस्थान के कुलाधिपति पद पर श्री बसंतराज भंडारी ने सन् 2012 से 2017 तक अपनी विशिष्ट सेवाएं प्रदान कर दिनांक 24 अप्रैल 2017 को सेवानिवृत्त हुए। उनकी निष्ठापूर्ण सेवाओं हेतु मातृ संस्था जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान परिवार हार्दिक आभार ज्ञापित करते हैं। प्रसिद्ध औद्योगिक घराने जिन्दल ग्रुप से सम्बद्ध श्रीमती सावित्री जिन्दल, हिसार को मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा दिनांक 25 अप्रैल 2017 को जैन विश्व भारती संस्थान के आगामी पांच वर्षों के लिए कुलाधिपति पद पर नियुक्त किया गया है। श्रीमती सावित्री देवी जिन्दल हरियाणा से विधायक रह चुकी हैं, जिन्दल स्टील्स एंड पॉवर लिमिटेड की अध्यक्ष हैं तथा तेरापंथ धर्मसंघ की समर्पित सुश्राविका हैं। श्रीमती सावित्री देवी जिन्दल के सफल कार्यकाल की मंगलकामना।

संस्थान के विभिन्न कार्यक्रम

विभाग	कार्यक्रम का नाम	तिथि
योग एवं जीवन विज्ञान विभाग	• योग विभाग का सेमिनार आयोजित	अप्रैल 2017
समाज कार्य विभाग	• ओजोन परत संरक्षण दिवस पर विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन	16 सितम्बर 2016
	• स्वच्छ भारत अभियान जागरूकता रैली का आयोजन	22 सितम्बर 2016
	• द्विदिवसीय महिला जागृति कार्यशाला आयोजित	19–20 जनवरी 2017
प्राच्य विद्या एवं भाषा विभाग	• राष्ट्रीय संगोष्ठी	21 नवम्बर 2016
	• द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित	29–30 नवम्बर 2016
जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म	• राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित	11–20 नवम्बर 2016
तथा दर्शन विभाग	• राष्ट्रीय सेमिनार	24–26 फरवरी 2017
अहिंसा एवं शाति विभाग	• शिक्षक दिवस एवं नवागंतुक विद्यार्थियों का स्वागत	03 सितम्बर 2016
	• अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस का आयोजन	03 सितम्बर 2016
	• एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर आयोजित	28 सितम्बर 2016
	• स्वच्छता अभियान का आयोजन	29 सितम्बर 2016
	• मानव अधिकार दिवस का आयोजन	10 दिसम्बर 2016
	• त्रिदिवसीय राज्य स्तरीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन	20–22 फरवरी 2017
	• युवा शिविर का आयोजन	फरवरी 2017
शिक्षा विभाग	• गणेश चतुर्थी एवं शिक्षक दिवस का आयोजन	05 सितम्बर 2016
	• विजयादशमी का आयोजन	10 अक्टूबर 2016
	• एंटी रैगिंग सेल जागरूकता कार्यक्रम	20 अक्टूबर 2016

	• जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन	12 नवम्बर 2016
	• संविधान दिवस का आयोजन	26 नवम्बर 2016
	• एकता दौड़ का आयोजन	28 नवम्बर 2016
	• सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन	7–8 दिसम्बर 2016
	• खेल–कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन	10–13 दिसम्बर 2016
	• स्वामी विवेकानंद जयंती का आयोजन	12 जनवरी 2017
	• मकर संक्रांति व लोहड़ी पर्व का आयोजन	13 जनवरी 2017
	• शिक्षण–प्रशिक्षण में प्रसार भाषणमाला का आयोजन	24 जनवरी 2017
	• प्रसार भाषणमाला का आयोजन	25 जनवरी 2017
	• बसंत पंचमी का आयोजन	01 फरवरी 2017
	• छात्राध्यापिकाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण	10 फरवरी 2017
	• उच्च शिक्षा व कॅरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित	13 फरवरी 2017
	• महाशिवरात्रि पर्व का आयोजन	23 फरवरी 2017
	• राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन	26 फरवरी 2017
	• अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन	08 मार्च 2017
	• फागोत्सव का आयोजन	11 मार्च 2017
	• डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती का आयोजन	13 अप्रैल 2017
आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय	• तीन दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित	21–23 जुलाई 2016
	• डांडिया नृत्य प्रतियोगिता	2016
	• शिक्षक दिवस	2 सितम्बर 2016
	• यूथ कॅरियर फेयर	19 अक्टूबर 2016
	• सड़क सुरक्षा पर व्याख्यान	12 दिसम्बर 2016
	• युवा पंजीकरण महोत्सव के तहत शिविर आयोजित	जनवरी 2017
	• सड़क सुरक्षा पर व्याख्यान	7 फरवरी 2017
	• अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	8 मार्च 2017
	• विदाई समारोह आयोजित	13 अप्रेल 2017
कॅरियर कॉउन्सलिंग एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय	• बैंकिंग में कॅरियर की संभावनाएं पर एक दिवसीय व्याख्यान माला आयोजित	16 सितम्बर 2016
	• कॅरियर निर्माण कार्यशाला	16 अक्टूबर 2016
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय	• क्षेत्रीय समन्वयक कार्यशाला	24–25 अक्टूबर 2016
	• सम्पर्क कक्षायें आयोजित	1 मई से 30 मई 2016
एमएसएस	• पल्स पोलियो अभियान में स्वयसेवकों को प्रशिक्षण	26 जनवरी 2016
संस्थान के अन्य कार्यक्रम	• पर्युषण पर्व आयोजित	9 सितम्बर 2016
	• पीएच.डी. स्कॉलर्स के लिए छःमाही कोर्स–वर्क का शुभारम्भ	16 सितम्बर 2016
	• "आदिवासी कविता में नारी अस्मिता का का प्रश्न" विषय पर सेमिनार	7 अक्टूबर 2016

• नैतिक दर्शन पर व्याख्यान माला	15 अक्टूबर 2016
• वार्षिक खेल–कूद प्रतियोगिता (गोला फेंक, तश्तरी फेंक, दौड़, ऊंची कूद, लम्बी कूद, बैडमिन्टन, शतरंज, केरम व टेबिल टेनिस प्रतियोगिता)	दिसम्बर 2016
• तीन दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं आयोजित	14–16 दिसम्बर 2016
• व्याख्यान माला	17 दिसम्बर 2016
• नव वर्ष समारोह का आयोजन	2 जनवरी 2017
• गणतंत्र दिवस आयोजित	26 जनवरी 2017
• महिला शिक्षा व स्वावलम्बन को समर्पित कार्यक्रम उत्कर्ष–2017	4 मार्च 2017
• मूल्य शिक्षा परियोजन कार्यक्रम की तहत कार्यशाला आयोजित	17 मार्च 2017
• एल्यूम्नी सीट रियूनियन–2017	8 अप्रैल 2017
• टैलेंट सर्च कॉम्पीटिशन	मार्च 2017

मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा जैन विश्व भारती संस्थान को प्रदत्त सहयोग

- मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा जैन विश्व भारती संस्थान को रु. 20 लाख का वित्तीय सहयोग अनुदानस्वरूप प्रदान किया गया।
- मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा जैन विश्व भारती संस्थान के आचार्य तुलसी महिला छात्रावास के नवीनीकरण एवं सौंदर्यीकरण का संपूर्ण कार्य लगभग रु. 20 लाख के खर्च से करवाया गया।

: प्रस्तुति :

श्री विनोद कुमार कक्कड़
कुलसचिव, जैन विश्व भारती संस्थान

कृतज्ञता/आभार

जैन विश्व भारती संस्थान के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी का संस्थान को निरन्तर आध्यात्मिक संरक्षण प्राप्त हो रहा है। आचार्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। जैन विश्व भारती संस्थान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमणजी के महनीय मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। संस्थान के विकास हेतु पूर्व कुलाधिपति श्री बसंतराज भंडारी के कुशल परामर्श एवं सहयोग हेतु हार्दिक आभार। संस्थान की नवनियुक्त कुलाधिपति श्रीमती सावित्री जिन्दल के सफल कार्यकाल की मंगलकामना। संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की सेवाओं हेतु हार्दिक साधुवाद। शैक्षणिक कार्य में विभिन्न समणीवृंद के मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। कुलसचिव श्री विनोद कुमार कक्कड़ की सेवाओं हेतु साधुवाद। संस्थान के वित्त सलाहकार श्री प्रमोद बैद की सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ महाविद्यालय के प्राध्यापकों/समणीवृंद की संस्थान की विभिन्न गतिविधियों जैसे– व्याख्यान, पाठ लेखन, प्रशिक्षण कार्यक्रम, संपर्क कक्षाओं की आयोजना में सक्रिय सहभागिता रही। संस्थान को प्रदत्त अनुदान हेतु सभी सहयोगी महानुभावों एवं परिवारों के प्रति हार्दिक आभार। संस्थान के प्रबंध मंडल, शिष्ट परिषद् एवं वित्त समिति के सदस्यों की सेवाओं हेतु साधुवाद। सभी प्रशासनिक अधिकारीगण, प्राध्यापकगण एवं गैर–शैक्षणिक कर्मीगणों को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद। संस्थान के विभिन्न आयोजनों एवं गतिविधियों में मातृ संस्था जैन विश्व भारती के कर्मीगणों के सहयोग हेतु धन्यवाद।

विमल विद्या विहार सीनियर सैकेण्डरी स्कूल

परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी का निरंतर यह प्रयास एवं प्रेरणा रही कि जैन विश्व भारती में एक ऐसा विद्यालय स्थापित हो जहां विद्यार्थियों के शैक्षणिक ज्ञान के साथ–साथ चारित्रिक विकास पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाये। आचार्यश्री तुलसी की प्रेरणा से जैन विश्व भारती द्वारा अप्रैल सन् 1989 में विमल विद्या विहार के नाम से अंग्रेजी माध्यम के नगर के प्रथम प्राथमिक विद्यालय का प्रारंभ हुआ। इस विद्यालय में नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक अंग्रेजी माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था है तथा यह लाडनूं व आस–पास के क्षेत्रों का सर्वप्रथम सी.बी.एस.ई. मान्यता प्राप्त विद्यालय है। विद्यालय तीन उच्च स्तरीय भवनों में संचालित है। वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या 1278 है।

विद्यालय द्वारा मेधावी एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों में से लगभग 50 विद्यार्थियों को 20 प्रतिशत, 25 विद्यार्थियों को 25 प्रतिशत एवं 25 विद्यार्थियों को 100 प्रतिशत छात्रवृत्तियां प्रदान की जा रही है।

विद्यार्थियों के आवागमन हेतु 5 बसों की सुव्यवस्था है। वर्तमान में लाडनूं एवं आसपास की लगभग 30 किलोमीटर की परिधि में विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थी इस सुविधा से लाभान्वित हो रहे हैं। विद्यार्थियों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक शक्ति, भाषा, लेखनी, कला एवं संगीत की विभिन्न कक्षाओं के साथ समय–समय पर विविध कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। विद्यार्थी प्राच्य कलाओं के साथ आधुनिक कार्यशैली में दक्ष एवं निपुण हों, इस उद्देश्य से कम्प्यूटर लैब, लैंग्वेज लैब, भौतिक एवं रासायनिक प्रयोगशाला की भी समीचीन व्यवस्था है। शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य संवर्द्धन हेतु विविध खेलकूद की समुचित व्यवस्था विद्यालय प्रांगण में है। शैक्षणिक सत्र 2016–17 की विद्यालय की विशिष्ट उपलब्धियां निम्न प्रकार हैं –

दो शैक्षणिक सत्रों का तुलनात्मक परीक्षा परिणाम

नर्सरी से कक्षा पांचवी तक –

शैक्षणिक सत्र	कुल विद्यार्थी	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
2015–16	779	779	–	100
2016–17	763	763	–	100

कक्षा 6 से 12 तक –

शैक्षणिक सत्र	कुल विद्यार्थी	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
2015–16	520	517	03	99.42
2016–17	522	512	10	98.08

- **उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम** : विद्यालय का सत्र 2016–17 का दसवीं बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम शत–प्रतिशत रहा एवं बारहवीं बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम 86 प्रतिशत रहा। 10वीं बोर्ड परीक्षाओं में इस वर्ष 10 विद्यार्थियों ने शत–प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया, इस हेतु विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शिक्षकगणों को साधुवाद।
- **विद्यालय की एन.सी.सी. छात्राओं के दल द्वारा विभिन्न आयोजनः** विद्यालय की एन.सी.सी. विंग की 22 छात्राओं द्वारा माह नवम्बर 2016 में जोधपुर में आयोजित जम्बूरी में दस दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया गया। उक्त विंग द्वारा स्पोर्टस् डे पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन किया गया। छात्राओं द्वारा बाल विवाह निषेध रैली, नशामुक्ति रैली, साईकिल रेस प्रतियोगिता में सहभागिता की गयी।

- **वार्षिक स्पोर्टस् डे का भव्य आयोजन** : दिनांक 24 दिसम्बर 2016 को एनुअल स्पोर्टस डे का आयोजन विद्यालय के खेल मैदान में जैन विश्व भारती अध्यक्ष श्री बी. रमेशचंद बोहरा की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर लाडनूं नगर के अनेक प्रशासनिक अधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे। सीनीयर एवं जूनियर दोनों वर्गों हेतु खेलकूद की विविध पृथक–पृथक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। विद्यार्थियों द्वारा योगा एवं मार्शल आर्ट के कार्यक्रम की विशेष प्रस्तुति दी गई। प्रतियोगिता में विजताओं को पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।
- **विद्यालय के पूर्व छात्र द्वारा लिखित पुस्तक का लोकार्पण** : भारतीय वायुसेना में कमांडेंट ऑफिसर एवं विद्यालय के पूर्व छात्र श्री विक्रम सिंह राठौड़ द्वारा लिखित पुस्तक "Miracles of Possitive India" का लोकार्पण विद्यालय की जूनियर विंग में दिनांक 18 फरवरी 2017 को विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती वनिता धर द्वारा किया गया। उल्लेखनीय है कि विद्यार्थी का निवेदन था कि जिस विद्यालय एवं जिन शिक्षकों से शिक्षा ग्रहण कर उसने प्रगति पथ पर आरोहण किया है, उसी विद्यालय में उसकी पुस्तक का लोकार्पण हो ताकि अन्य विद्यार्थियों को भी प्रेरणा प्राप्त हो सके और विद्यालय और शिक्षकों के प्रति उसका स्वयं का कृतज्ञता ज्ञापन भी हो सके।
- **प्राईमरी सेक्शन की चार कक्षाओं का जीवन विज्ञान भवन में स्थानान्तरण** : विगत वर्ष जीवन विज्ञान भवन में प्रारम्भ की गयी प्री प्राइमरी कक्षाओं के सुचारु संचालन को ध्यान में रखते हुए कक्षा चार तक के समस्त सेक्शन का जीवन विज्ञान भवन में स्थानान्तरण किया गया।
- **विद्यालय में शैक्षणिक स्तर उन्नयन हेतु नवीन बहुप्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति** : विद्यालय में गुणवत्तायुक्त शिक्षण कार्य की दृष्टि से सीनियर कक्षाओं हेतु नवीन सत्र में गणित, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र एवं प्राइमरी कक्षाओं हेतु उच्च प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं की नियुक्तियां की गई।
- **विद्यालय के पांच विद्यार्थी यंग अचीवर अवार्ड से पुरस्कृत** : **आर.एस.एम.बी.** यूनिवर्सिटी, बीकानेर द्वारा आयोजित सेमिनार में विद्यालय की कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों ने सहभागिता की तथा इसके अन्तर्गत यूनिवर्सिटी द्वारा विद्यालय के पांच विद्यार्थियों को 'यंग अचीवर अवार्ड' से पुरस्कृत किया गया।
- **जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन** : चेन्नई से समागत जीवन विज्ञान प्रशिक्षक श्री राकेश खटेड़ द्वारा विद्यालय में जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- **सोलर एनर्जी पर कार्यशाला का आयोजन** : विद्यालय की कक्षा 9 के विद्यार्थियों द्वारा सोलर एनर्जी पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कृतज्ञता/आभार

विद्यालय को लगभग एक दशक तक समणी मधुरप्रज्ञाजी ने महनीय आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान कर विद्यालय में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया, उनके प्रति श्रद्धाभावों सहित हार्दिक कृतज्ञता। विद्यालय की पूर्व प्रबंधक सुश्री कमला कठोतिया ने भी लगभग एक दशक तक विद्यालय को अपनी अमूल्य मानद सेवाएं प्रदान की, उनके प्रति हार्दिक आभार। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती वनीता धर द्वारा निष्ठापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक साधुवाद।

डॉ. विजयश्री शर्मा की कुशल देखरेख हेतु साधुवाद। समस्त शिक्षक–शिक्षिकाओं एवं कर्मचारीगणों को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

टी. अमरचंद लुंकड़
विभागाध्यक्ष
शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती

पुखराज बडोला / तनसुख नाहर
संयुक्त संयोजक
विमल विद्या विहार

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, जयपुर

'महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल' का शुभारम्भ दिनांक 06 अप्रैल, 2006 को जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में किया गया। जयपुर शहर के निर्माण नगर के ज्ञान विहार में स्थित इस विद्यालय की गणना शहर के प्रमुख सी. बी.एस.ई. मान्यता प्राप्त इंग्लिश माध्यम के विद्यालयों में होती है। यह विद्यालय जहां एक ओर प्रदूषण रहित, सघन हरीतिमा से युक्त परिवेश में बच्चों की छुपी हुई प्रतिभाओं को उजागर कर उन्हें राष्ट्रोपयोगी बनाने के प्रयासों की एक बेहतरीन पहल कर रहा है वहीं दूसरी ओर आधुनिक तकनीकी एवं संसाधनों से युक्त इस विद्यालय को ऑडियो–विजुअल प्रोजेक्टर, सुसज्जित कम्प्यूटर लैब, सेण्डपिट एवं थिमेटिक–टीचिंग आदि आधुनिक व्यवस्थाओं से संपन्न बनाया गया है। विद्यालय में स्कूली शिक्षा के साथ विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास व सुसंस्कारित जीवन कौशल की क्रियान्विति पर विशेष बल दिया जा रहा है।

प्रथम सत्र में विद्यालय को प्रारम्भिक कक्षा (प्ले ग्रुप) के कक्षा पांच तक संचालित किया गया गया जो प्रतिवर्ष क्रमोन्नति के अनुसर गत शैक्षणिक सत्र में कक्षा 12 तक विस्तारीकरण किया गया। वर्तमान में विद्यालय में 25 अध्यापक–अध्यापिका वर्ग एवं नये सत्र में 97 विद्यार्थियों के प्रवेश के साथ विद्यार्थियों की संख्या 376 है। शैक्षणिक सत्र 2016–17 के उल्लेखनीय कार्यों की जानकारी निम्नलिखित है–

दो शैक्षणिक सत्रों का तुलनात्मक परीक्षा परिणाम

नर्सरी से कक्षा पांचवी तक –

शैक्षणिक सत्र	कुल विद्यार्थी	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
2015–16	170	170	–	100
2016–17	153	153	–	100

कक्षा 6 से 12 तक –

शैक्षणिक सत्र	कुल विद्यार्थी	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
2015–16	168	166	2	98.82
2016–17	170	164	6	96.47

- **वार्षिकोत्सव का आयोजन** : दिनांक 19 नवम्बर 2016 में विद्यालय के वार्षिकोत्सव का आयोजन महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम, जयपुर में किया गया। कार्यक्रम में अधिकाधिक विद्यार्थियों की सहभागिता एवं उनकी प्रतिभा को उजागर करने की दृष्टि से अधिकांश विद्यार्थियों को कार्यक्रम में प्रस्तुति का अवसर प्रदान किया गया। विद्यार्थियों के साथ–साथ उनके अभिभावकों में भी इस आयोजन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया रही। कार्यक्रम अत्यन्त समयबद्ध, सुव्यवस्थित और गरिमापूर्ण रहा।
- **विज्ञान विषय हेतु अनुमोदन** : आलोच्य अवधि में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यालय में विज्ञान विषय के संचालन हेतु अनुमोदन एवं आगामी पांच वर्षों तक संबद्धता प्राप्त की गई।
- **फायर अलार्म की स्थापना** : सुरक्षा की दृष्टि एवं आग दुर्घटना से बचाव हेतु फायर फाईटिंग सिस्टम के अन्तर्गत विद्यालय भवन के प्रत्येक तल पर फायर फाईटिंग सिस्टम स्थापित किए गए।
- **वाटर कूलर का क्रय** : विद्यालय में विद्यार्थियों की सुविधार्थ पीने हेतु ठण्डे पानी के लिए विद्यालय द्वारा एक नये वाटर कूलर का क्रय किया गया।

- **सी.सी.टी.वी. कैमरों की स्थापना** : सुरक्षा दृष्टि एवं विद्यार्थियों पर निगरानी रखने की दृष्टि से विद्यालय की फिजिक्स एवं कैमेस्ट्री लैब में सी.सी.टी.वी. कैमरे लगवाये गए।

  स्वागत कक्ष का नवीनीकरण एवं वातानुकूलीकरण : वर्तमान युगीन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में स्वागत कक्ष को आधुनिक संसाधनों से परिपूर्ण किया गया तथा स्वागत कक्ष को वातानुकूलित करने की दृष्टि से एक नया ए.सी. लगवाया गया।

- **जॉय ऑफ गिविंग का आयोजन** : परहित और समर्पण भाव की व्यावहारिक शिक्षा देने व उसके पश्चात् मिलने वाले आनंद की अनुभूति करवाने की दृष्टि से दिनांक 02–07 अक्टूबर 2016 तक विद्यालय द्वारा जॉय ऑफ गिविंग का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत कक्षा 5 व 6 के विद्यार्थियों को वृद्धाश्रम, कक्षा 7 के विद्यार्थियों को स्ट्रीट चिल्ड्रन्स के पास तथा कक्षा 8 के विद्यार्थियों को कुष्ठ आश्रम ले जाया गया जहां पर विद्यार्थियों ने अपनी आवश्यकताओं में से कुछ अंश देकर देने के बाद मिलने वाले आनंद का अनुभव किया।

- **बाल मेले का आयोजन** : दिनांक 26 जनवरी 2017 को विद्यालय परिसर में जीवन कौशल के गुणों को सिखाने के लिए बाल मेले का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रकार की 20 स्टालें लगाई गई तथा जीवन कौशल व व्यवहारिक जीवन के अनेक प्रकार के हुनरों को सीखा।

- **सहशैक्षणिक भ्रमण का आयोजन** : मनोरंजन के साथ–साथ विद्यार्थियों में सहयोगपूर्ण वातावरण के विकास व प्राकृतिक सौंदर्य के लिए सवेदनाओं को जगाने के उद्देश्य से विद्यार्थियों हेतु सनराईज रिसोर्ट में एकदिवसीय शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को भ्रमण हेतु बिड़ला तारामंडल भी ले जाया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने खगोल शास्त्र के द्वारा ग्रह–नक्षत्रों संबंधी गतिविधियों का गहनतापूर्वक अध्ययन किया। प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को डियर पार्क भी ले जाया गया, जहां विद्यार्थियों ने बालसुलभ वन के वन्य जीवों व प्रकृति को करीब से देखते हुए आनंद की अनुभूति की तथा प्रकृति के क्षेत्र में संवेदनशीलता का अनुभव किया।

- **चारित्रात्माओं का विद्यालय में पदार्पण** : दिनांक 11 मई 2017 को विद्यालय में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती आदरास्पद 'शासन स्तम्भ' 'मंत्रीमुनि' मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी का पावन पदार्पण हुआ। इस अवसर पर मुनिप्रवर की अभिवंदना में जैन विश्व भारती के कोषाध्यक्ष एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के संयुक्त संयोजक गौरव जैन मांडोत तथा पन्नालाल पुगलिया एवं तेरापंथी सभा, जयपुर के अध्यक्ष श्री दौलत डागा सहित अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित हुए। विद्यार्थियों एवं शिक्षकगणों को मुनिप्रवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ।

- **ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन** : विद्यालय द्वारा दिनांक 12–26 मई 2017 तक ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें क्रिकेट, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल, गणित दक्षता एवं मानसिक गणित, कम्प्यूटर, स्पोकन इंग्लिश, संगीत उपकरण आदि का प्रशिक्षण दिया गया। उक्त ग्रीष्मकालीन शिविर में लगभग 48 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

आभार

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती नीलिमा गुप्ता को निष्ठापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु साधुवाद। समस्त शिक्षक–शिक्षिकाओं एवं कर्मचारीगणों को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

टी. अमरचंद लुंकड़
विभागाध्यक्ष
शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती

गौरव जैन/पन्नालाल पुगलिया
संयुक्त संयोजक
महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, टमकोर

राजस्थान के झुंझुनू जिले का छोटा सा कस्बा है– 'टमकोर'। इस कस्बे को विश्वसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्मस्थली होने का गौरव प्राप्त है। सन् 2006 में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के टमकोर पदार्पण के अवसर पर कस्बे एवं उसके आस–पास के क्षेत्र के शैक्षणिक विकास का चिंतन चला। उसी चिंतन की फलश्रुति के रूप में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जन्म दिवस के अवसर पर दिनांक 12 जुलाई 2007 को टमकोर में 'महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल' का शुभारंभ हुआ। शैक्षणिक सत्र 2010–11 से यह विद्यालय जैन विश्व भारती की इकाई के रूप में संचालित किया जाने लगा। वर्तमान में इस विद्यालय में टमकोर व आस–पास के गांवों के 491 छात्र–छात्राएं अध्ययनरत हैं। अंग्रेजी माध्यम के इस विद्यालय में जीवन विज्ञान तथा अणुव्रत की कक्षाएं भी नियमित चल रही है। विद्यालय के शैक्षणिक सत्र 2016–17 की प्रमुख गतिविधियों की जानकारी निम्नलिखित है–

गत दो शैक्षणिक सत्रों का तुलनात्मक परीक्षा परिणाम

शैक्षणिक सत्र	कुल विद्यार्थी	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
2015–16	489	489	–	100
2016–17	491	491	–	100

- **स्कूल बसों का क्रय :** टमकोर के आस–पास के क्षेत्रों से विद्यार्थियों के आवागमन की सुविधार्थ जैन विश्व भारती द्वारा वर्तमान शैक्षणिक सत्र में 26–26 सीटर की दो नई स्कूल बसों का क्रय किया गया।
- **आर. ओ. प्लांट की स्थापना :** विद्यालय में पीने के लिए मीठे पानी की सुविधार्थ टमकोर के श्रावक श्री भालचंद चोरड़िया द्वारा विद्यालय को आर.ओ. प्लांट प्रदान किया गया, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार।
- **उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम :** विद्यालय का सत्र 2016–17 का वार्षिक परीक्षाओं का कुल परिणाम एवं कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा का परिणाम शत–प्रतिशत रहा। उत्कृष्ट परिणाम देने वाले विद्यार्थियों को बधाई एवं शिक्षकगणों के निष्ठापूर्ण श्रम हेतु साधुवाद।
- **प्रवेशोत्सव का आयोजन :** नये शैक्षणिक सत्र 2017–18 के शुभारम्भ के अवसर पर विद्यालय में दिनांक 05–10 मई 2017 को प्रवेशोत्सव मनाया गया, जिसमें नवागंतुक छात्र–छात्राओं का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर गत शैक्षणिक सत्र में कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।
- **वार्षिकोत्सव का आयोजन :** दिनांक 26 मार्च 2017 को विद्यालय के वार्षिकोत्सव का आयोजन विद्यालय परिसर में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अलसीसर के ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री राजेन्द्र खीचड़ उपस्थित थे। कार्यक्रम में अधिकाधिक विद्यार्थियों को प्रस्तुति का अवसर प्रदान किया गया। कार्यक्रम में अभिभावकों सहित टमकोर के गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। आयोजन गरिमापूर्ण रहा।
- **खेल युक्त शैक्षणिक वातावरण :** नर्सरी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए खेल युक्त शैक्षणिक वातावरण तैयार किया गया, इस हेतु टमकोर निवासी कोलकाता प्रवासी श्री सेन कुमार भंसाली द्वारा शैक्षिक खेल सामग्री, झूले आदि सामग्री विद्यालय को भेंट की गई, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार।

- **परिसर हरितीकरण एवं वृक्षारोपण :** विद्यालय परिसर व प्रार्थना सभा स्थल को हरा–भरा व सुरम्य बनाने की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के पौधे लगाये गये।

कृतज्ञता/आभार

समणी पुण्यप्रज्ञाजी का विद्यालय के संचालन एवं विकास में महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री लोकेश तिवारी द्वारा निष्ठापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक साधुवाद। सभी अध्यापकगण, अध्यापिकागण एवं कर्मचारीगण को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

टी. अमरचंद लुंकड़	रणजीतसिंह कोठारी	ललित कुमार दूगड़
विभागाध्यक्ष	संयोजक	संयुक्त संयोजक
शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती	महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल	महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल

शिक्षा संपोषण योजना

जैन विश्व भारती के संरक्षण में गतिशील जैन विश्व भारती संस्थान तथा जैन विश्व भारती के अन्तर्गत संचालित शैक्षणिक इकाईयों– विमल विद्या विहार, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर एवं महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर के समुचित विकास की दृष्टि से गत वर्ष से **'शिक्षा संपोषण योजना'** प्रारम्भ की गई। इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक अनुदानदाता से **'शिक्षा संपोषक'** के रूप में रु. 1 लाख की अनुदान राशि प्राप्त की जा रही है। प्राप्त अनुदान राशि को विश्वविद्यालय व शैक्षणिक इकाईयों के विकास में यथावश्यकता उपयोग किया जा रहा है।

इस योजना के अनुदानदाता, प्रेरक, सहयोगी एवं ज्ञात–अज्ञात रूप से जुड़े सभी महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार।

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती की स्थापना के मूलभूत उद्देश्यों में प्राच्य विद्याओं एवं जैन धर्म–दर्शन के अध्ययन–अध्यापन का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। समण संस्कृति संकाय सुसंस्कारों की प्रयोगशाला है जो भावी पीढ़ी में सद्–संस्कारों का वपन करने, जैनत्व के संस्कारों के संरक्षण एवं उनके उन्नत व सुदृढ़ भविष्य का निर्माण करने के लिए जैन विद्या पाठ्यक्रम की लम्बी श्रृंखला के माध्यम से सन् 1977 से जैन विश्व भारती के एक विभाग के रूप में संचालित है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में केवल बौद्धिक विकास पर बल दिया जा रहा है। बच्चों को अनुशासन और चरित्रनिष्ठा के संस्कारों से भावित करने के लिए उन्हें अध्यात्म के संस्कार भी देने आवश्यक हैं। हमारी बालपीढ़ी जैनत्व के संस्कारों से जुड़ी रहे, जैन संस्कृति के अनुरूप उनके आचार–विचार, व्यवहार और खान–पान की पवित्रता और शुद्धता बनी रहे, इसके लिए समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित जैन विद्या के अध्ययन के द्वारा सुसंस्कारों के निर्माण का महत्त्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है।

जैन विद्या का अध्ययन न केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में उपयोगी है अपितु सामाजिक व व्यावहारिक क्षेत्र में भी इसकी उपादेयता है। समण संस्कृति संकाय का पूरा तंत्र विशेष जागरूकता के साथ परीक्षाओं का संचालन करता है। भारत के प्रायः सभी राज्यों में व नेपाल में स्थान–स्थान पर सैंकड़ों केन्द्र स्थापित हैं। अब तक 272 स्थायी केन्द्र हो चुके हैं। जैन विद्या का नववर्षीय पाठ्यक्रम निर्धारित है। इसके माध्यम से प्रतिवर्ष 300–350 केन्द्रों से हजारों की संख्या में प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी एवं दशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की पावन अध्यात्म रश्मियों से प्रकाशमान बना जैन विश्व भारती का यह विभाग वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन आध्यात्मिक संरक्षण में सतत् विकासशील है।

- **जैन विद्या परीक्षाएं :** समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित सत्र 2016–17 की जैन विद्या परीक्षाएं दिनांक 15–16 अक्टूबर 2016 को 316 केन्द्रों पर आयोजित हुई। इन परीक्षाओं में 14238 आवेदकों में से 9245 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। परीक्षा परिणाम 83.42 प्रतिशत रहा। परीक्षा परिणाम जैन विश्व भारती व तेरापंथ की वेबसाइट **www.jvbharati.org** एवं **www.terapanthinfo.com** के माध्यम से सबको उपलब्ध करवाया गया। इन परीक्षाओं के व्यवस्थित नियोजन में परीक्षा संयोजक श्रीमती सुशिला गोलछा, दिल्ली की सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। सभी प्रभारी, आंचलिक संयोजक, केन्द्र व्यवस्थापक एवं निरीक्षकों का विशेष सहयोग रहा, एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक आभार।

गत दो वर्षों की परीक्षाओं का तुलनात्मक विवरण

सत्र	केन्द्र	स्थायी / अस्थायी	आवेदक	परीक्षार्थी	उत्तीर्ण	परिणाम प्रतिशत
2015–16	302	225 / 77	13639	8927	7389	82.77
2016–17	316	215 / 101	14238	9245	7712	83.42

- **जैन विद्या दीक्षांत समारोह :** समण संस्कृति संकाय का सबसे महत्वपूर्ण समारोह है–'जैन विद्या दीक्षांत समारोह'। जैन विद्या परीक्षाओं में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थियों को दीक्षांत–समारोह में संकाय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्रदान कर सम्मानित किया जाता है। जैन विद्या भाग 1–9 की सम्पूर्ण परीक्षाएं उत्तीर्ण कर लेने पर विद्यार्थी को 'विज्ञ उपाधि' से नवाजा जाता है। इससे जैन विद्या के अध्ययन–अध्यापन का स्वस्थ वातावरण निर्मित होता है।

  संकाय का 19वां दीक्षांत समारोह परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में दिनांक 07 जुलाई 2017 को कोलकाता में आयोजित किया गया। इस समारोह में विज्ञ उपाधि प्राप्तकर्ता 86, अखिल भारतीय स्तर पर वरीयता प्राप्त 45, जैन विद्या कार्यशाला वरीयता 22, जैन विद्या कार्यशाला परिषद् 29, लेख प्रतियोगिता 19 एवं अन्य कार्यकर्ताओं सहित कुल 201 संभागियों / संस्थाओं को सम्मानित किया गया।

  दीक्षांत समारोह में पावन सान्निध्य एवं आशीर्वचन प्रदान करवाने हेतु पूज्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। विभिन्न सत्रों में सान्निध्य एवं पाथेय प्रदान करवाने हेतु चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता। दीक्षान्त समारोह के आयोजन हेतु श्री सुरेन्द्र बोरड़ पटावरी, मोमासर–बेल्जियम के प्रायोजकीय सहयोग हेतु हार्दिक आभार। दीक्षांत समारोह की समन्वयक डॉ. राजकुमारी सुराना, कोलकाता व उनकी टीम के सहयोग हेतु हार्दिक आभार। आयोजन की विभिन्न व्यवस्थाओं में आचार्य महाश्रमण चार्तुमास प्रवास व्यवस्था समिति, कोलकाता के सहयोग हेतु आभार।

- **प्रभारी, आंचलिक संयोजक व केन्द्र व्यवस्थापक कार्यशाला :** जैन विद्या परीक्षाओं से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के प्रभारी, आंचलिक संयोजकों व केन्द्र व्यवस्थापकों के आपसी समन्वय व सहयोग से जैन विद्या के कार्य को और अधिक गति प्रदान करने की दृष्टि से प्रतिवर्ष कार्यशाला आयोजित की जाती है। वर्ष 2017 की कार्यशाला दिनांक 06 जुलाई 2017 को कोलकाता (पश्चिम बंगाल) में आयोजित हुई, जिसमें जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी, मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री योगेशकुमारजी तथा मुनिश्री मननकुमारजी का सान्निध्य एवं पाथेय प्राप्त हुआ। कार्यशाला में लगभग 250 महानुभावों ने सहभागिता की। कार्यशाला में जैन दर्शन एवं जैन विद्या के कार्यों को गति देने हेतु चिंतन–मंथन किया गया। कार्यशाला के उपरान्त पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी एवं साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का पावन पाथेय प्राप्त हुआ, इस हेतु हार्दिक कृतज्ञता। सान्निध्य एवं दिशाबोध हेतु मुनिवृंद के प्रति कृतज्ञता।

- **जैन विद्या विज्ञ उपाधि धारक अधिवेशन** : समण संस्कृति संकाय के अन्तर्गत विगत 27 वर्षों (1990–2016) में जिन महानुभावों को विज्ञ की उपाधियां प्रदान की गई, वे सभी एक मंच पर एकत्रित हो एवं उनका अध्ययन जैन विद्या के प्रचार–प्रसार में बहुपयोगी सिद्ध हो, इस उद्देश्य से दिनांक 05 जुलाई 2017 को कोलकाता में 'जैन विद्या विज्ञ उपाधि धारक अधिवेशन' का आयोजन किया गया, जिसमें 112 विज्ञ उपाधि धारकों ने भाग लिया। सहभागी भाई–बहिनों को परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का पावन सान्निध्य एवं पाथेय प्राप्त हुआ। आचार्य प्रवर ने सभी विज्ञ उपाधि धारको को आगे संघ सेवा के किसी उपक्रम में जुड़ने की प्रेरणा प्रदान की।

- **जैन विद्या कार्यशाला** : समण संस्कृति संकाय एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा संयुक्त रूप से गत छः वर्षों से जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। प्रतिवर्ष की भांति गत वर्ष भी दिनांक 01–15 अगस्त 2016 को जैन विद्या कार्यशाला भाग–7 का आयोजन किया गया। भाग– 7 की कार्यशाला में 3593 प्रतियोगियों ने सहभागिता की। कार्यशाला के प्रभारी श्री राजेश चावत, बैंगलोर के श्रम व सहयोग हेतु हार्दिक आभार। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् एवं स्थानीय शाखा परिषदों के सहयोग हेतु साधुवाद। सभी संभागियों को प्रमाण पत्र एवं वरीयता प्राप्त करने वालों को पुरस्कार दिनांक 07 जुलाई 2017 को कोलकाता में आयोजित दीक्षांत समारोह में प्रदान किये गये।

- **जैन विद्या भाग–1 से संबंधित प्रतियोगिता** : घर बैठे ही नए विद्यार्थी जैन विद्या भाग–1 व 2 की परीक्षा में सुगमतापूर्वक जुड़ सकें, इसके लिए समण संस्कृति संकाय द्वारा यह प्रतियोगिता प्रारंभ की गई। प्रतियोगिता को उम्र के हिसाब से 2 भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम 15 वर्ष की उम्र तक तथा द्वितीय 16 वर्ष से अधिक की उम्र के लिए। प्रथम प्रतियोगिता की संयोजिका श्रीमती सरिता बरड़िया, जयपुर एवं द्वितीय प्रतियोगिता की संयोजिका डॉ. श्रीमती राजकुमारी सुराना के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

- **जैन विद्या सप्ताह** : जैन विद्या के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु गत वर्ष से पूरे देश के विभिन्न क्षेत्रों में 'जैन विद्या सप्ताह' का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष जैन विद्या सप्ताह का आयोजन दिनांक 10–16 जुलाई 2017 को पूरे देश में किया गया, जिसके कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु सह संयोजक श्रीमती प्रेमलता सिसोदिया के प्रति हार्दिक आभार।

- **संपर्क कक्षाओं का आयोजन** : जैन विद्या के अध्ययन को और अधिक मजबूत बनाने के उद्देश्य से देश के विभिन्न क्षेत्रों में संपर्क कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है। संपर्क कक्षाओं के कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु श्रीमती ललिता धारीवाल, रायपुर के प्रति हार्दिक आभार।

- **जैन विद्या संगठन यात्रा** : प्रभारी तथा आंचलिक संयोजकों ने अपने–अपने क्षेत्र के परीक्षा केन्द्रों की सार–संभाल व जैन विद्या के प्रचार–प्रसार हेतु प्रभारी व आंचलिक संयोजकों ने अपने–अपने क्षेत्रों में केन्द्र व्यवस्थापकों के माध्यम से संगठन यात्रा की। इस दौरान उन्होंने केन्द्र व्यवस्थापक विज्ञ उपाधि धारकों, अन्य कार्यकर्ताओं व स्थानीय संस्थाओं के साथ बैठकें आयोजित कर जैन विद्या के व्यापक प्रचार–प्रसार व विकास के लिए चिंतन–मंथन किया। इस यात्रा से संकाय की नयी पहचान बनी, तेरापंथ समाज का तन–मन–धन से सहयोग प्राप्त हुआ तथा लोगों की जैन विद्या के प्रति रुचि बढ़ी। सभी संबंधित प्रभारी व आंचलिक संयोजकों के श्रम हेतु आभार। सत्र 2017–18 की संगठन यात्रा के कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु सह संयोजक श्रीमती विमला कोठारी के प्रति हार्दिक आभार।

- **जैन विद्या कोष की स्थापना** : समण संस्कृति संकाय के अन्तर्गत जैन विद्या से संबंधित विभिन्न गतिविधियों व योजनाओं के सुचारु संचालन की दृष्टि से समाज के सहयोग से एक 'जैन विद्या कोष' की स्थापना गत वर्ष से की गई, जिसमें चार श्रेणियां रखी गई हैं–

श्रेणी	श्रेणी का नाम	राशि
प्रथम	जैन विद्या विशिष्ट संपोषक	05 लाख
द्वितीय	जैन विद्या संपोषक	01 लाख
तृतीय	जैन विद्या विशिष्ट सहयोगी	51 हजार
चतुर्थ	जैन विद्या सहयोगी	11 हजार

- **सोशल मीडिया एवं वाट्सएप ग्रुप के माध्यम से प्रचार–प्रसार** : समण संस्कृति संकाय द्वारा अपनी गतिविधियों के प्रचार–प्रसार हेतु प्रभारी, आंचलिक संयोजकों, केन्द्र व्यवस्थापकों, विज्ञ उपाधिधारक, वरीयता विजेताओं एवं कार्यशाला के अनेक ग्रुप बनाए हैं। विभागाध्यक्ष, संयोजक एवं कार्यालय सहयोगियों के अलावा 400 जनों की टीम के विशेष प्रयासों से संकाय जैन विद्या के प्रचार–प्रसार में अग्रसर है। सभी सहयोगीगण के प्रति आभार।
- **जैन विद्या के संपूर्ण पाठ्यक्रम की ऑनलाईन उपलब्धता** : जैन विद्या से संबंधित संपूर्ण नौ वर्षीय पाठ्यक्रम जैन विश्व भारती के साहित्य वेब पोर्टल **http://books.jvbharati.org** पर अपलोड किया जा चुका है। अब जैन विद्या के परीक्षार्थी ऑनलाईन अध्ययन कर सकते हैं।
- **जैन विद्या विज्ञ उपाधि धारक निर्देशिका** : समण संस्कृति संकाय के अन्तर्गत विगत 27 वर्षों (1990–2016) में जिन महानुभावों को विज्ञ की उपाधियां प्रदान की गई, उनके संपूर्ण परिचय के संकलन हेतु 'जैन विद्या विज्ञ उपाधि धारक निर्देशिका' का निर्माण श्री जितेन्द्र मालू, चेन्नई के संपादकत्व में किया जा रहा है, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार। निर्देशिका के विज्ञापन संकलन में प्रेरक के रूप में श्री चंदन कुमार बैंगानी–कोलकाता, श्रीमती सरिता बरड़िया–जयपुर, श्रीमती उर्मिला पीपाड़ा–जालना एवं श्रीमती सरोज भंडारी–वणी के सहयोग हेतु आभार।
- **जय तिथि पत्रक का प्रकाशन** : समण संस्कृति संकाय द्वारा मर्यादा महोत्सव के अवसर पर विगत 39 वर्षों से निरन्तर जन उपयोगी सामग्री के साथ जय तिथि पत्रक (पंचांग) का प्रकाशन किया जा रहा है। इस वर्ष वि. सं. 2074 का जय तिथि पत्रक प्रकाशित कर सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल) मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमणजी के कर–कमलों से लोकार्पित किया गया। जय तिथि पत्रक के सम्पादन में 'शासन स्तम्भ' 'मंत्री मुनि' मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' अपना बहुमूल्य समय नियोजित कर रहे हैं, मुनिश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। प्रकाशन में आर्थिक सौजन्य के रूप में सहयोगी महानुभावों, परिवारों एवं संस्थाओं के प्रति हार्दिक आभार।
- **आगम मंथन प्रतियोगिता** : आगम स्वाध्याय के प्रति रुचि जाग्रत करने के उद्देश्य से संचालित 'आगम मंथन प्रतियोगिता' इस वर्ष से समण संस्कृति संकाय के अन्तर्गत आयोजित की जा रही है। 'श्री भिक्षु आगम विषय कोष भाग–1' पर आधारित 'आगम मंथन प्रतियोगिता IX'' का शुभारंभ दिनांक 02 फरवरी 2017 को परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में सिलीगुड़ी में किया गया। प्रतियोगिता के प्रथम चरण की परीक्षा हेतु 'श्री भिक्षु आगम विषय कोष भाग–1' पुस्तक पर आधारित 800 अंकों के 353 प्रश्न रखे गए। प्रथम चरण की परीक्षा में कुल 1064 संभागी रहे। प्रतियोगिता में आध्यात्मिक मार्गदर्शन हेतु मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं मुनिश्री मननकुमारजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। प्रायोजकीय सहयोग हेतु 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' श्रीमती गजराबाई भंवरलाल बोहरा, मुसालिया–चेन्नई के आर्थिक सौजन्य हेतु हार्दिक आभार। समन्वयक के रूप में श्रीमती हेमलता नाहटा, उदयपुर एवं सह–समन्वयक के रूप में श्री अशोक कच्छारा, उदयपुर के सहयोग हेतु हार्दिक आभार। देशभर में प्रतियोगिताओं के क्षेत्रीय प्रभारीगणों के सहयोग हेतु आभार। व्यवस्था संबंधी कार्यों के कुशलतापूर्वक निष्पादन हेतु सुश्री प्रज्ञा सिंघी को हार्दिक धन्यवाद। सभी प्रतियोगियों को साधुवाद एवं उनके उज्ज्वल आध्यात्मिक जीवन की मंगलकामना।

कृतज्ञता/आभार

समण संस्कृति संकाय के विकास हेतु 'शासनश्री' मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' एवं मुनिश्री जयंतकुमारजी का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन तथा गुरुकुलवास में जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी का महनीय मार्गदर्शन, कार्यशालाओं आदि में सान्निध्य समय–समय पर प्राप्त होता रहता है, एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। अनेक चारित्रात्माओं एवं समणीवृंद का निरन्तर दिशादर्शन प्राप्त होता रहता है, एतदर्थ उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। समण संस्कृति संकाय के संयोजक श्री पन्नालाल पुगलिया–जयपुर एवं श्री महावीर धारीवाल–जालना की सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। जैन विद्या परीक्षाओं के पूर्व संयोजक श्री निलेश

बैद–चेन्नई की सेवाओं हेतु आभार एवं नवनियुक्त संयोजक श्री महेन्द्र सेठिया–चेन्नई के सफल कार्यकाल हेतु मंगलकामना। केन्द्र व्यवस्थापकों ने अपनी संपूर्ण जिम्मेदारी व सजगता से अध्ययन, अध्यापन व परीक्षा संबंधी स्थानीय व्यवस्थाओं आदि का दायित्व निर्वहन किया, इस हेतु उनके प्रति आभार। जैन विद्या परीक्षाओं के आयोजन में विभिन्न स्थानीय संघीय संस्थाओं, आंचलिक संयोजकों एवं कार्यकर्त्ताओं के सहयोग एवं श्रम हेतु हार्दिक साधुवाद। समण संस्कृति संकाय, लाडनूं कार्यालय की प्रभारी श्रीमती सरिता सुराणा, उनके सहयोगी श्री पदमचंद नाहटा, श्रीमती कमला बैद, श्री गोविंद सिंह एवं श्री राजपाल सिंह के कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

मालंचद बेगानी
विभागाध्यक्ष
समण संस्कृति संकाय

जीवन विज्ञान विभाग

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के लोककल्याणकारी अवदानों में से एक है– 'जीवन विज्ञान'। शिक्षा के इस क्रांतिकारी आयाम को राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए जैन विश्व भारती के अन्तर्गत जीवन विज्ञान विभाग निरन्तर प्रयासरत है। आलोच्य अवधि में जीवन विज्ञान विभाग के उल्लेखनीय कार्यों की जानकारी निम्नलिखित है–

- **जीवन विज्ञान दिवस समारोह** : आचार्यश्री महाप्रज्ञ को प्रदत्त महाप्रज्ञ अलंकरण के उपलक्ष्य में दिनांक 12 नवम्बर 2016 को 'जीवन विज्ञान दिवस' का आयोजन देश–विदेश के विभिन्न क्षेत्रों में समारोहपूर्वक मनाया गया। मुख्य समारोह परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में फैन्सी बाजार, गुवाहाटी स्थित वीतराग समवसरण में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में मेघालय के राज्यपाल महामहिम श्री वी. षणमुखनाथन उपस्थित थे। कार्यक्रम में स्थानीय विद्यालयों के सैकड़ों छात्र–छात्राओं एवं अध्यापकों ने भाग लेकर आचार्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त कर नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया। आयोजन की सुव्यवस्था हेतु आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, गुवाहाटी एवं स्थानीय कार्यकर्ताओं के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

  जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में समणी नियोजिका समणी ऋजुप्रज्ञाजी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में लाडनूं नगर के 17 विद्यालयों से लगभग 1600 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर जीवन विज्ञान जागरूकता रैली से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मुनिश्री विमलकुमारजी ने भिक्षु विहार से रैली को संबोधित कर मंगलपाठ सुनाया।

  सुधर्मा सभा में कार्यक्रम समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी के सान्निध्य एवं लाडनूं नगरपालिका अध्यक्षा श्रीमती संगीता पारीक के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुआ। इस अवसर पर विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान का प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

  इसी प्रकार अकादमी के निर्देशन में विदेश की धरती दुबई के साथ–साथ दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई, इन्दौर, भिलाई, नोखा, नागरपुर, धुबड़ी, अररिया, विजयनगर, जयपुर आदि देश के अनेक क्षेत्रों से चारित्रात्माओं के सान्निध्य में जीवन विज्ञान दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया।

- **आचार्य सम्मेलन का आयोजन :** दिनांक 05 अक्टूबर 2016 को होजाई (असम) में विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय 'आचार्य सम्मेलन' में जीवन विज्ञान अकादमी के सहायक निदेशक हनुमानमल शर्मा ने प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के विभिन्न प्रयोगों का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यक्रम में पूर्वोत्तर क्षेत्र के नगांव, होजाई, मौरीगांव, कारबी अंगलांग एवं वेस्ट कारबी अंगलांग जिलों से लगभग 750 प्राचार्य तथा आचार्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम में जीवन विज्ञान अकादमी, गुवाहाटी के संयोजक सुशीलकुमार डागा, विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र की उपाध्यक्ष श्रीमती मधु डागा, आयोजन सचिव ब्रह्माजी राव, पूर्णकालिक सक्रिय कार्यकर्ता मनोज कालिता, चन्द्रकान्त दास एवं कार्यक्रम समन्वयक धर्मदेब ब्रह्मचारी का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक आभार।
- **त्रिदवसीय अणुव्रत जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर :** अणुव्रत समिति, गुवाहाटी के तत्वावधान में दिनांक 14–16 अक्टूबर, 2016 को अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन, गुवाहाटी में मुनिश्री जम्बूकुमारजी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। शिविर उद्घाटन के अवसर पर राज्य के शिक्षा सचिव श्री रमेशचन्द जैन ने शिक्षकों को शिविर में जीवन विज्ञान और योग का मन लगाकर प्रशिक्षण प्राप्त करने की प्रेरणा दी। शिविर में असम राज्य के विभिन्न राजकीय विद्यालयों से 35 शिक्षक–शिक्षिकाओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्य में श्री बजरंग जैन, श्री विक्रम सेठिया एवं हनुमानमल शर्मा का सहयोग रहा। अणुव्रत समिति, गुवाहाटी के अध्यक्ष श्री निर्मल सामसुखा, उपाध्यक्ष श्री नवरत्न गधैया, मंत्री श्री बजरंग बैद, पूर्व अध्यक्ष श्री सुबोध कोठारी, श्री राजकरण बुच्चा, श्री संपत मिश्रा, श्री निर्मल बैद, श्री छत्तरसिंह चौरड़िया, जयकुमार भंसाली, अशोक सेठिया आदि का सहयोग रहा। सभी सहयोगीगणों के प्रति हार्दिक आभार।
- **जीवन विज्ञान सेमिनार का आयोजन :** मूल्यपरक शिक्षा के अभिनव उपक्रम जीवन विज्ञान को शिक्षा के साथ जोड़कर पूर्वोत्तर क्षेत्र में विशेष जागरूकता की दृष्टि से आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य तथा जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक मार्गदर्शक मुनिश्री योगेशकुमारजी के निर्देशन में दिनांक 21 से 23 अक्टूबर, 2016 तक जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं के संयुक्त तत्वावधान में Jeevan Vigyan : A Value Based Education System विषय पर जीवन विज्ञान सेमीनार का आयोजन हुआ।

  दिनांक 21.10.2016 को सेमीनार का उद्घाटन असम के राज्यपाल महामहिम श्री बनवारीलाल पुरोहित द्वारा किया गया। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री बी. रमेशचन्द बोहरा, मुख्य न्यासी श्री पुखराज बडोला, जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डी. गौतमकुमार सेठिया, श्री सुशीलकुमार डागा, श्री ख्यालीलाल तातेड़ आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। जीवन विज्ञान, जैन विश्व भारती तथा जैन विश्व भारती संस्थान की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की गई।

  सेमीनार के दूसरे दिन दिनांक 22.10.2016 को मुख्य अतिथि के रूप में असम राज्य के मुख्यमंत्री माननीय श्री सर्वानन्द सोनवाल की उपस्थिति रही। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष, मुख्य न्यासी, संयुक्त मंत्री, न्यासी आदि पदाधिकारीगण ने सोनवाल का स्वागत एवं सम्मान किया।

  इसी प्रकार सेमीनार के तृतीय दिवस पर 'महाप्रज्ञ अलंकरण' जीवन विज्ञान दिवस के पोस्टर का विमोचन जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री श्री जीवनमल मालू, विभागाध्यक्ष डी. गौतमकुमार सेठिया, श्री ख्यालीलाल तातेड़ द्वारा पूज्य प्रवर के सान्निध्य में किया गया। इस सेमीनार में देश एवं विदेश में स्थित जीवन विज्ञान अकादमियों से 61 जीवन विज्ञानी कार्यकर्ता महानुभावों ने उपस्थित होकर पूज्यप्रवर एवं चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में गहन चिन्तन मंथन एवं विचार–विमर्श किया। पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी, साध्वीप्रमुखाश्रीजी सहित मुख्य मुनि मुनिश्री महावीरकुमारजी, मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री अशोककुमारजी, मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री योगेशकुमारजी, मुनिश्री अनेकान्त कुमारजी, साध्वीश्री शुभ्रयशाजी, साध्वीश्री आरोग्यश्रीजी, साध्वीश्री सिद्धार्थप्रभाजी, साध्वीश्री राजुलप्रभाजी, समणी चैतन्यप्रज्ञाजी, प्रो. के.पी.एन. मिश्रा, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. प्रियदर्शनाजी जैन, डॉ. उल्हास वारे, श्री बजरंग जैन,

श्री मर्यादा कुमार कोठारी, श्री राकेश खटेड़, श्रीमती माला कातरेला, श्री पारसमल दूगड़, श्री विजय वौरा, श्रीमती अनिता अगरकर, श्रीमती जयश्री डागा, श्री श्यामसुन्दर शर्मा आदि विद्वानों ने विभिन्न सत्रों में अपने विचार रखे।

सायंकालीन सत्रों में श्री राकेश खटेड़ एवं सुश्री याशिका खटेड़ के नेतृत्व में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा सारगर्भित नाट्य–मंचन के माध्यम से स्वस्थ समाज संरचना हेतु सुन्दर संदेश दिया गया। सेमीनार की व्यवस्थाओं में जीवन विज्ञान अकादमी, गुवाहाटी के कर्मठ कार्यकर्ताओं, आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, गुवाहाटी के पदाधिकारीगणों सहित सेमीनार समन्वयक श्रीमती मधु डागा, संयुक्त समन्वयक श्रीमती माला कातरेला, जीवन विज्ञान अकादमी गुवाहाटी के अध्यक्ष श्री सुशील कुमार डागा आदि का उल्लेखनीय सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ, एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक आभार।

विविध

- जीवन विज्ञान को व्यापक बनाने की दृष्टि से विभागाध्यक्ष डी. गौतम कुमार सेठिया एवं श्री राकेश खटेड़ द्वारा दिनांक 04–08 जनवरी 2017 तक देश के विभिन्न शहरों यथा– कोलकाता, दिल्ली, सूरत, मुंबई, चेन्नई आदि में क्षेत्रीय जीवन विज्ञान संगोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिनमें जीवन विज्ञान को व्यापक स्वरूप तथा एकरूपता प्रदान करने संबंधी चिंतन व विचार–विमर्श किया गया।
- दिनांक 14 फरवरी 2017 को बांसवाड़ा के न्युलुक स्कूल के संचालकों से संपर्क कर जीवन विज्ञान पाठ्य–पुस्तकों की जानकारी एवं नमूना प्रतियां उपलब्ध करवाई गई, जिसके फलस्वरूप वहां से लगभग 2000 पाठ्य–पुस्तकों का आदेश प्राप्त हुआ। इस कार्य में श्री राकेश खटेड़ का विशेष प्रयास रहा।
- दिनांक 23 फरवरी 2017 को कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, ठरड़ा (सुजानगढ़) की छात्राओं के भ्रमण दल को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान, का प्रशिक्षण प्रदान किया गया, 25 छात्राएं, प्रधानाचार्य सहित 5 शिक्षक–शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।
- दिनांक 28 फरवरी 2017 को टैगोर एज्युकेशन ग्रुप, जसरासर (नोखा) से समागत 51 विद्यार्थियों एवं 11 शिक्षकों को जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास तथा एकाग्रता व स्मरण शक्ति के प्रयोगों का अभ्यास करवाया गया एवं प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।
- दिनांक 01 मार्च 2017 को श्री लाडमनोहर उ. मा. विद्यालय एवं विमल विद्या विहार उ. मा. विद्यालय के लगभग 150 विद्यार्थियों को स्मरण शक्ति, एकाग्रता विकास तथा परीक्षा हॉल में भयमुक्ति के प्रयोग करवाये गये।
- केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी एवं जीवन विज्ञान अकादमी, बांसवाड़ा के सहयोग से न्युलुक स्कूल, बांसवाड़ा में दिनांक 22–24 मार्च 2017 तक जीवन विज्ञान शिक्षक एवं विद्यार्थी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के 50 से अधिक शिक्षक–शिक्षिकाओं एवं लगभग 200 छात्रों ने भाग लिया।
- जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय संयोजक की प्रेरणा से तमिलनाडु के 7 क्षेत्रों में क्षेत्रीय जीवन विज्ञान अकादमियों की स्थापना कर क्षेत्रीय संयोजक नियुक्त किये गये। इसके साथ ही पूर्व में संचालित चैंगलपेट, वैल्लूर एवं इरोड की अकादमियों से संपर्क कर जीवन विज्ञान के और अधिक व्यापक प्रचार–प्रसार की प्रेरणा दी गई।
- जीवन विज्ञान विभाग के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी तथा प्रेक्षाप्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी की प्रेरणा एवं विभागाध्यक्ष डी. गौतमकुमार सेठिया एवं श्री राकेश खटेड़ तथा उनके सहयोगी सदस्यों के सद्प्रयासों से जीवन विज्ञान लेवल–1 की पाठ्यपुस्तक का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का नवीनतम रंगीन संशोधित संस्करण तैयार हो कर देशभर में कार्यरत जीवन विज्ञान अकादमियों एवं जीवन विज्ञान कार्यकर्ताओं के माध्यम से देश के अनेक विद्यालयों में पहुंच चुका है। इसी प्रकार लेवल–2 व 3 का नवीनतम संशोधित संस्करण प्रकाशन प्रक्रिया में है।
- केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी के अथक प्रयास से छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले के आदिवासी अंचल में योग एवं जीवन विज्ञान विषय के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम हेतु प्रेरणा प्रदान कर 26 आवेदन पत्र भरवाए गए एवं

जैन विश्व भारती संस्थान का संपर्क एवं सूचना केन्द्र स्थापित करवाया गया। इस केन्द्र पर दिनांक 01–31 मई तक प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु संस्थान के निवेदन पर अकादमी के सहायक निदेशक श्री हनुमानमल शर्मा ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

- दिनांक 27 मई 2017 को श्री भरत डी. मरलेचा, चेन्नई द्वारा तमिलनाडु के राज्यपाल से संपर्क कर जीवन विज्ञान साहित्य भेंट किया गया।
- दिनांक 29 मई 2017 को श्री राकेश खटेड़ एवं श्री विक्रम सेठिया ने पूज्यप्रवर, जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी, जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी आदि चारित्रात्माओं के दर्शन कर जीवन विज्ञान की गति–प्रगति की जानकारी प्रदान की।
- प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी के सान्निध्य में हरियाणा राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में जीवन विज्ञान के प्रचार–प्रसार का कार्य निरन्तर गतिशील है। इस हेतु प्रशिक्षक श्री महेन्द्र कुमावत द्वारा दिनांक 26 मई से 12 जून तक सेवाएं प्रदान की गई।
- जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता 2016–17 हेतु प्रक्रिया पुनः प्रारम्भ की गई। ज्ञातव्य है कि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से वर्ष 2016 में इस प्रतियोगिता का आयोजन स्थगित किया गया था।

देशभर में संचालित जीवन विज्ञान अकादमियों की जानकारी

01.	जीवन विज्ञान अकादमी, कोबा–गांधीनगर
02.	जीवन विज्ञान अकादमी, हरियाणा– भिवानी
03.	मध्य प्रदेश जीवन विज्ञान अकादमी, इन्दौर
04.	तमिलनाडु जीवन विज्ञान अकादमी, तिरुवन्नामलै
05.	जीवन विज्ञान अकादमी संस्था, भीलवाड़ा
06.	राजस्थान जीवन विज्ञान अकादमी, अजमेर
07.	जीवन विज्ञान अकादमी, जयपुर
08.	जीवन विज्ञान अकादमी (अणुविभा), राजसमंद
09.	कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी, बैंगलोर
10.	जीवन विज्ञान अकादमी, गुड़गांव
11.	जीवन विज्ञान अकादमी, जसोल
12.	जीवन विज्ञान अकादमी, रतलाम
13.	जीवन विज्ञान अकादमी, मदुरै
14.	छत्तीसगढ़ जीवन विज्ञान अकादमी, दुर्ग–भिलाई
15.	जीवन विज्ञान अकादमी, मुम्बई
16.	महाराष्ट्र जीवन विज्ञान अकादमी, जलगांव
17.	जीवन विज्ञान अकादमी, नोखा
18.	उड़ीसा प्रान्तीय जीवन विज्ञान अकादमी, टिटिलागढ़
19.	जीवन विज्ञान अकादमी, गदग
20.	झारखण्ड जीवन विज्ञान अकादमी, करसर
21.	जीवन विज्ञान अकादमी संस्था, सरदारशहर
22.	जीवन विज्ञान अकादमी, ईरोड
23.	जीवन विज्ञान अकादमी, पल्लावरम्–चेन्नई
24.	जीवन विज्ञान अकादमी, सुजानगढ़
25.	जीवन विज्ञान अकादमी, बालोतरा
26.	जीवन विज्ञान अकादमी, कुक्कुटपल्ली, हैदराबाद
27.	जीवन विज्ञान अकादमी, बांसवाड़ा
28.	जीवन विज्ञान अकादमी, आरा, बिहार
29.	जीवन विज्ञान अकादमी, सूरत
30.	जीवन विज्ञान अकादमी, आमेट
31.	जीवन विज्ञान अकादमी, चूरू
32.	जीवन विज्ञान अकादमी, नागपुर
33.	जीवन विज्ञान अकादमी, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता
34.	जीवन विज्ञान अकादमी, कोलकाता
35.	जीवन विज्ञान अकादमी, दिल्ली
36.	जीवन विज्ञान अकादमी, गौहाटी
37.	जीवन विज्ञान अकादमी, अजमन (यू.ए.ई.)

उक्त जीवन विज्ञान अकादमियां स्वतंत्र रूप से कार्यरत हैं एवं जीवन विज्ञान विभाग द्वारा समय–समय पर यथायोग्य मार्गदर्शन, प्रशिक्षण सहयोग एवं जीवन विज्ञान साहित्य आदि उपलब्ध करवाया जाता है। इन अकादमियों से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग व श्रम हेतु हार्दिक आभार।

कृतज्ञता/आभार

जीवन विज्ञान विभाग के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी का जीवन विज्ञान के प्रभावी प्रस्तुतीकरण एवं विकास हेतु सतत मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है, एतदर्थ मुनिप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। जीवन विज्ञान के विकास हेतु 'प्रेक्षाप्राध्यापक' मुनिश्री किशनलालजी का महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन लम्बे समय से निरन्तर प्राप्त हो रहा है, एतदर्थ हार्दिक कृतज्ञता। जीवन विज्ञान के विकास एवं प्रचार–प्रसार में सक्रिय कार्यकर्ता एवं प्रबुद्ध चिंतक श्री राकेश खटेड़, चेन्नई का निष्ठापूर्ण श्रम व सहयोग प्राप्त हो रहा है, एतदर्थ हार्दिक आभार। जीवन विज्ञान प्रशिक्षकों व जीवन विज्ञान अकादमियों से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग हेतु आभार। जीवन विज्ञान विभाग कार्यालय के सहायक निदेशक श्री हनुमानमल शर्मा, प्रशिक्षक श्री रामेश्वर शर्मा एवं श्री महेन्द्र कुमावत द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद। इस प्रवृत्ति से जुड़े सभी कार्यकर्तागण, सहयोगीगण एवं प्रशिक्षकगण को हार्दिक धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

डी. गौतम कुमार सेठिया
विभागाध्यक्ष, जीवन विज्ञान विभाग

सेवा

शिक्षा के साथ–साथ सेवा सेवा के क्षेत्र में भी जैन विश्व भारती अग्रणी है। जैन विश्व भारती परिसर में 'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला', बीदासर में 'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र', विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा केन्द्र एवं स्व. मनोहरीदेवी दूगड़ आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र, बीदासर सुचारु रूप से संचालित है।

SEWABHAVI
DEDICATED TO AYURVED

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

राष्ट्र संत युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी की सद्प्रेरणा से उनके अग्रज सेवाभावी मुनिश्री चम्पालालजी की स्मृति में सन् 1978 में जैन विश्व भारती में सेवा की एक इकाई के रूप में 'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' का शुभारम्भ किया गया। जैन विश्व भारती परिसर में इसका संचालन एक न्यास के अन्तर्गत हो रहा है, जिसमें जैन विश्व भारती के अध्यक्ष व मंत्री पदेन न्यासी हैं। परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं आचार्यश्री महाश्रमणजी के शुभाशीर्वाद से सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला विगत लगभग 38 वर्षों से जन सामान्य की चिकित्सा सेवा में संलग्न है।

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला का मुख्य उद्देश्य शास्त्रीय विधान से प्रामाणिक एवं विश्वसनीय आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण कर जन सामान्य को चिकित्सा सेवा से लाभान्वित करना है। रसायनशाला को राज्य सरकार के आयुर्वेद विभाग से 345 प्रकार की शास्त्रीय तथा 37 प्रकार की प्रोपराइटरी (अनुभूत) औषधियों के निर्माण हेतु ड्रग मेन्यूफेक्चरिंग लाईसेंस नं. 692–डी प्राप्त है। इन औषधियों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की बहुमूल्य औषधियां (स्वर्ण भस्म व चांदी भस्म युक्त), रस, कूपी, पक्व रसायन, पर्पटी भस्म, पिष्टी, वटी, गुग्गुल, आसवारिष्ट, तैल, लौह मण्डूर, अवलेह, क्वाथ, शोधित द्रव्य, सत्त्व एवं क्षार तथा विशिष्ट स्वाम्य औषधियों का निर्माण कुशल वैद्यों के निर्देशन में उच्च स्तरीय गुणवत्ता नियंत्रण पद्धति के साथ किया जाता है। रसायनशाला को राज्य सरकार के आयुर्वेद विभाग से जीएमपी सर्टिफिकेट अर्थात् विशुद्ध औषध निर्माण पद्धति का प्रमाण पत्र प्राप्त है।

रसायनशाला द्वारा निर्मित औषधियों के प्रयोग से अब तक हजारों रोगियों ने विभिन्न प्रकार के जीर्ण एवं जटिल रोग जैसे– पथरी, वात रोग, अस्थमा, पाईल्स, सभी प्रकार के ज्वर, रक्तचाप, कैंसर, अग्निमांद्य तथा दौर्बल्य आदि रोगों में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया है। अपनी स्थापनाकाल से अब तक जन सामान्य के साथ–साथ अपनी औषधियों के द्वारा साधु–साध्वियों एवं समण–समणीयों की आरोग्य सेवा में योगभूत बन रसायनशाला प्रबंधन अपने आपको अत्यंत सौभाग्यशाली महसूस करता है। रसायनशाला का दृष्टिकोण कभी व्यावसायिक नहीं रहा,

इसलिए मात्रा को आधार मानकर अपने उत्पादों की गुणवत्ता के साथ कभी समझौता नहीं किया गया एवं उत्तम किस्म की औषधियों का निर्माण करना ही इसका मुख्य लक्ष्य रहा है। रसायनशाला की आलोच्य वर्ष की गति–प्रगति की जानकारी इस प्रकार है–

- **रसायनशाला में निःशुल्क परामर्श एवं चिकित्सा सेवा** – ओ.पी.डी. विभाग के अन्तर्गत संचालित है, जिसमें दो वैद्यों की सेवाएं रोगियों को निःशुल्क प्राप्त है। प्रतिदिन लाडनूं एवं आस–पास के क्षेत्रों के रोगी आकर इस सुविधा का लाभ प्राप्त करते हैं। आलोच्य अवधि में 4782 रोगियों ने इस सुविधा के अन्तर्गत आरोग्य सेवा का लाभ प्राप्त किया।
- **सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला के बैंगलोर में आउटलेट का शुभारंभः** देवराज मूलचंद नाहर चेरिटेबल ट्रस्ट, बैंगलोर द्वारा नाहर आर्केड, बैंगलोर में दिनांक 19 जून 2017 को सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला द्वारा निर्मित विशुद्ध एवं जी.एम.पी. प्रमाणित आयुर्वेदिक औषधियों के विक्रय एवं समुचित प्रचार–प्रसार हेतु नव प्रतिष्ठान 'महेन्द्रा आयुर्वेद सेन्टर' का शुभारंभ किया गया। स्वैच्छिक रूप से रसायनशाला को सहयोग एवं इसके प्रचार–प्रसार की दृष्टि से प्रारंभ इस कार्य हेतु देवराज मूलचंद नाहर चेरिटेबल ट्रस्ट, बैंगलोर के प्रति हार्दिक आभार। महेन्द्रा आयुर्वेद सेन्टर के संचालन में सुश्री वंदना नाहर, बैंगलोर की निष्ठापूर्ण सेवाओं एवं सहयोग हेतु हार्दिक आभार। श्री नवीन मेहता के सहयोग हेतु आभार। चिकित्सक के रूप में डॉ. कन्हैयालाल शर्मा (बी.ए.एम.एस.) एवं डॉ. वृदिनी शशीधरा (बी.ए.एम.एस.) कार्यरत है।
- **कर्नाटक के आयुर्वेद विश्वविद्यालयों में रसायनशाला के उत्पादों का प्रचार–प्रसार :** कर्नाटक के बैंगलोर, मैसूर आदि क्षेत्रों के आयुर्वेद विश्वविद्यालयों में रसायनशाला के उत्पादों का प्रचार–प्रसार कर वहां के दवा विक्रय केन्द्रों में इन उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा रहा है।
- **निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजनः** दिनांक 15–22 जून 2017 को सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला व महेन्द्रा आयुर्वेद सेन्टर, बैंगलोर के संयुक्त तत्वावधान में नाहर आर्केड, बैंगलोर में निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें रसायनशाला के वैद्य श्री ओमप्रकाश शर्मा, चुरू की सेवाएं प्राप्त हुई। शिविर में सैंकड़ों रोगियों ने सेवा का लाभ प्राप्त किया। उक्त शिविर के प्रायोजकीय सहयोग हेतु देवराज मूलचंद नाहर चेरिटेबल ट्रस्ट, बैंगलोर के प्रति हार्दिक आभार।
- **रसायनशाला में नई मशीनों की स्थापनाः** रसायनशाला के उत्पादों में वृद्धि हेतु चूर्ण बनाने की एक बड़ी मशीन तथा गोली बनाने की एक बड़ी मशीन क्रय की गई। चूर्ण बनाने की मशीन के क्रय में गंगाशहर के निष्ठाशील श्रावक श्री हंसराज डागा का उल्लेखनीय सहयोग रहा तथा गोली बनाने की मशीन के क्रय में श्री आलोक भंसाली–वाराणासी का विशेष सहयोग रहा, एतदर्थ हार्दिक आभार। मशीनों के प्रायोजकीय सहयोग हेतु देवराज मूलचंद नाहर चेरिटेबल ट्रस्ट, बैंगलोर के प्रति हार्दिक आभार।

आभार

रसायनशाला के विकास हेतु जैन विश्व भारती के अध्यक्ष एवं रसायनशाला के पदेन न्यासी श्री बी. रमेशचंद बोहरा तथा जैन विश्व भारती के मंत्री व रसायनशाला के पदेन न्यासी श्री राजेश कोठारी के सक्रिय सहयोग एवं समन्वय भाव हेतु हार्दिक आभार। रसायनशाला के न्यासी श्री अभयराज बैंगानी का दैनिक प्रशासनिक कार्यों में निरन्तर मार्गदर्शन, सहयोग एवं सेवाएं प्राप्त हो रही है, इस हेतु उनके प्रति हार्दिक आभार। अन्य सभी न्यासीगणों श्री रूपचंद दूगड़–मुंबई, श्री सुखराज सेठिया–दिल्ली, श्री बाबूलाल सेखानी–अहमदाबाद, श्री जीवनमल जैन (मालू)–बंगाईगांव एवं श्री गिरीश लूनिया–विराटनगर के समय–समय पर प्राप्त मार्गदर्शन एवं सहयोग हेतु आभार। रसायनशाला के विकास, प्रचार–प्रसार, उत्पादन कार्य आदि में श्री आलोक भंसाली–वाराणसी का उल्लेखनीय मार्गदर्शन, सेवाएं व सहयोग प्राप्त हो रहा है, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार। श्री छगनलाल जम्मड़, दिल्ली का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, उनके प्रति आभार। रसायनशाला के प्रशासक श्री राजेन्द्र खटेड़ द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद। आयुर्वेद के अनुभवी वरिष्ठ चिकित्सक वैद्य श्री संतोषकुमार शर्मा एवं वैद्य श्री ओमप्रकाश शर्मा की सेवाओं हेतु साधुवाद एवं सभी कर्मचारीगण को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

मूलचंद नाहर
मुख्य न्यासी सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र, बीदासर

प्राकृतिक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर एवं फिजियोथेरेपी पद्धति से रोगियों की चिकित्सा हेतु श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र की स्थापना जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में बीदासर में की गई। यहां आधुनिक उपकरणों द्वारा व्यायाम की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान में केन्द्र के अंतर्गत होम्योपैथिक चिकित्सा से रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है, जिसमें केवल बीदासर ही नहीं अपितु आस–पास के अनेक गांवों से प्रतिमाह लगभग 700–800 रोगी आकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं। प्रत्येक रविवार को तेरापंथ भवन, बीदासर में शिविर लगाया जाता है, जिसमें चारित्रात्माओं के अलावा गांव के लोग भी स्वास्थ्य लाभ हेतु आते हैं। प्रतिदिन रोगी के हिसाब से इस चिकित्सालय से आलोच्य अवधि में 8343 रोगियों ने निःशुल्क चिकित्सा सेवा का लाभ प्राप्त किया। चिकित्सा प्रभारी एवं हौम्योपेथिक विभाग में सेवारत डॉ. विजेन्द्र कुमार गौड़ को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद।

विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा केन्द्र

सेवा के क्षेत्र में जैन विश्व भारती द्वारा 'विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा पद्धति' के नाम से उपक्रम संचालित है। जैन विश्व भारती स्थित आरोग्यम चिकित्सालय में संचालित इस चिकित्सा केन्द्र में विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा पद्धति द्वारा विभिन्न जटिल रोग जैसे– लकवा, पोलियो, स्लिप डिस्क, स्पोण्डिलाइटिस, रीढ़ की हड्डी के रोगों के इलाज के साथ दमा, उच्च रक्तचाप आदि का भी सुगम इलाज किया जा सकता है। जैन विश्व भारती में आवासित लोगों के साथ–साथ स्थानीय सभी जाति एवं वर्ग के लोग स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं तथा दूर–दराज क्षेत्रों से भी चिकित्सा हेतु लोग उपस्थित होते हैं। इस चकित्सा केन्द्र से आलोच्य अवधि में कुल 2593 रोगियों ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। वर्तमान में चिकित्सक के रूप में डॉ. हिमांशु मालपुरी कार्यरत हैं। उनको कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद।

स्व. मनोहरी देवी दूगड़ आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र, बीदासर

जैन विश्व भारती के अंतर्गत बीदासर में माणकचंद रूपचंद दूगड़ चेरिटेबल ट्रस्ट, बीदासर–मुंबई के प्रायोजकत्व में दिनांक 01 नवम्बर 2011 से 'स्व. मनोहरी देवी दूगड़ आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र' का प्रारंभ किया गया। यह केन्द्र बीदासर निवासी श्री रूपचंद दूगड़ के निजी अतिथि गृह में संचालित है। यहां आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति द्वारा चिकित्सा की व्यवस्था है तथा सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला से निर्मित आयुर्वेदिक औषधियां चिकित्सा की दृष्टि से प्रयोग की जाती हैं। वैद्य श्री विजयकुमार शर्मा चिकित्सक के रूप में कार्यरत हैं। इस केन्द्र में उक्त ट्रस्ट के सौजन्य से रोगियों के उपचार की निःशुल्क व्यवस्था है। प्रतिदिन रोगी के हिसाब से इस चिकित्सालय से आलोच्य अवधि में 26868 रोगियों ने निःशुल्क चिकित्सा सेवा का लाभ प्राप्त किया। प्रायोजक ट्रस्ट माणकचंद रूपचंद दूगड़ चेरिटेबल ट्रस्ट, बीदासर–मुंबई के आर्थिक सौजन्य हेतु हार्दिक आभार। वैद्य श्री विजयकुमार शर्मा को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

समणी केन्द्र व्यवस्था

प्रारम्भ से ही समण श्रेणी की व्यवस्था का दायित्व निर्वहन कर जैन विश्व भारती अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रही है। जैन विश्व भारती परिसर में स्थित गौतम ज्ञानशाला में समणीवृंद का निरन्तर प्रवास रहता है। जैन विश्व भारती की समस्त गतिविधियों में समण श्रेणी की सक्रिय सहभागिता रहती है। विदेश यात्रा से संबंधित पासपोर्ट, वीजा, कानूनी दस्तावेज आदि तैयार करवाने तथा देश–विदेश में यात्रायित समण श्रेणी के विभिन्न वर्गों से बराबर संपर्क एवं अपेक्षित कार्यों की संपूर्ति में जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। समण श्रेणी की भारत एवं विदेश यात्राओं से संबंधित विभिन्न व्यवस्थाओं का समन्वय भी जैन विश्व भारती द्वारा किया जाता है।

वर्ष 2016-17 में समण-समणीवृंद की विदेशों में निम्न पर्युषण यात्राएं प्रस्तावित हैं-

1.	समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञा एवं समणी मलयप्रज्ञा	:	लॉस एजेंलस (अमेरिका)
2.	समणी कुसुमप्रज्ञा एवं समणी पुण्यप्रज्ञा	:	लंदन
3.	समणी मंजुप्रज्ञा एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा	:	इण्डोनेशिया
4.	समणी विपुलप्रज्ञा एवं समणी आदर्शप्रज्ञा	:	मलेशिया

इनके अतिरिक्त विदेश के केन्द्रों में वर्ष 2016-17 में लगभग स्थायी रूप से निम्नलिखित समणी वर्ग प्रवासित रहे-

1.	समणी भावितप्रज्ञा एवं समणी रत्नप्रज्ञा	:	ओरलैण्डो
2.	समणी सन्मतिप्रज्ञा एवं समणी जयन्तप्रज्ञा	:	न्यूजर्सी
3.	समणी कंचनप्रज्ञा एवं समणी प्रणवप्रज्ञा	:	ह्यूस्टन
4.	समणी सत्यप्रज्ञा एवं समणी रोहिणीप्रज्ञा	:	मियामी
5.	समणी प्रतिभाप्रज्ञा एवं समणी उन्नतप्रज्ञा	:	लंदन

उपर्युक्त केन्द्रों एवं यात्राओं के दौरान वहां प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत, अहिंसा प्रशिक्षण एवं जैन धर्म दर्शन के अनेक विषयों पर समणीवृंद के व्याख्यान, सेमिनार, शिविर एवं कार्यशालाएं आयोजित हुई। समणीवृंद के श्रम हेतु हार्दिक कृतज्ञता एवं व्यवस्थाओं में स्थानीय संघीय संस्थाओं व कार्यकर्ताओं के सहयोग हेतु आभार।

साधना

प्रेक्षा फाउण्डेशन

'प्रेक्षा फाउण्डेशन' जैन विश्व भारती का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यह प्रेक्षाध्यान संबंधी समग्र गतिविधियों की सर्वोच्च नियामक संस्था है। इसका ध्येय है– प्रेक्षाध्यान को विश्वव्यापी बनाकर समस्त मानव जाति की आध्यात्मिक सेवा करना। प्रेक्षा फाउण्डेशन पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी एवं प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के अमूल्य अवदान 'प्रेक्षाध्यान' को वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के कुशल आध्यात्मिक नेतृत्व में निष्ठा से संचालित कर रहा है।

- **तुलसी अध्यात्म नीडम्** : प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित आचार्य तुलसी के नाम से बना यह केन्द्र साधना का पवित्र स्थान है। यह वह स्थान है जहां युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी और प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से हजारों लोगों ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कर अपने जीवन में बदलाव एवं शांति का अनुभव किया है। इस केन्द्र में वातानूकूलित ध्यान कक्ष, वाचनालय, 30 आवासीय कमरे, भोजनालय, कार्यालय आदि अवस्थित हैं।
- **साधक निवास** : प्रेक्षा फाउण्डेशन साधकों के साधना की समुचित व्यवस्था करता है। जो व्यक्ति लम्बे समय तक तुलसी अध्यात्म नीडम् में रहकर साधना करना चाहें, उनके लिए उपयुक्त व्यवस्था उपलब्ध है। समुचित आवास, सात्विक भोजन व पवित्र वातावरण सहज ही साधकों को साधना के मार्ग पर अग्रसर होने में सहायक बनता है। इच्छुक साधक–साधिकाएं व्यवस्थापकों से संपर्क कर अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक साधना के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं।
- **प्रेक्षाध्यान शिविर एवं कार्यशाला** : जीवन को रूपान्तरित करने का एक सशक्त माध्यम है– प्रेक्षाध्यान शिविर। प्रेक्षा फाउण्डेशन नियमित रूप से प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन करता है, जिसमें हजारों लोग

संभागी बनकर लाभान्वित हो चुके हैं। प्रेक्षा फाउण्डेशन जैन विश्व भारती, लाडनूं सहित देश के अन्य शहरों में भी प्रेक्षाध्यान शिविरों एवं कार्यशालाओं का आयोजन करता है। आलोच्य अवधि में आयोजित शिविरों का विवरण निम्नलिखित है–

क्र. सं.	दिनांक	शिविर का नाम	स्थान
01	11–18 अक्टूबर 2016	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम्
02.	11–18 नवम्बर 2016	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम्
03.	11–18 दिसम्बर 2016	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम्
04.	11–18 फरवरी 2017	मेगा प्रेक्षाध्यान शिविर	आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र
05.	11–18 मार्च 2017	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम्
06.	11–18 अप्रैल 2017	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम्
07.	01–08 जुलाई 2017	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम्
08.	01–08 अगस्त 2017	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम्
09.	01–08 सितम्बर 2017	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम् (प्रस्तावित)

उक्त शिविरों में सैंकड़ों शिविरार्थियों ने सहभागिता कर प्रेक्षाध्यान का लाभ उठाया। शिविर के दौरान समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी, समणी मधुरप्रज्ञाजी, समणी मल्लीप्रज्ञाजी, समणी मंजुलप्रज्ञाजी, समणी रोहिणीप्रज्ञाजी, समणी सुलभप्रभाजी, समणी श्रेयसप्रज्ञाजी, समणी अमलप्रज्ञाजी, समणी मृदुप्रज्ञाजी आदि का सान्निध्य, मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण सहयोग प्राप्त हुआ, तदर्थ सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। प्रेक्षा फाउण्डेशन के संयोजक श्री राजेन्द्र मोदी एवं प्रशिक्षक श्री महावीर प्रजापत की सेवाओं हेतु साधुवाद।

- **सप्त दिवसीय मेगा प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन** : जैन विश्व भारती स्थित 'आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र' के भवन में प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा दिनांक 11 से 18 फरवरी 2017 तक सप्तदिवसीय तृतीय मेगा प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारम्भ समणी कुसुमप्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य में हुआ। सप्त दिवसीय शिविर के दौरान प्रतिदिन समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी द्वारा प्रेक्षाध्यान के सैद्धान्तिक पक्ष का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर के प्रतिदिन का प्रारम्भ और समापन समणी श्रेयसप्रज्ञाजी के ध्यान के चार चरण – कायोत्सर्ग, अन्तर्यात्रा, श्वास प्रेक्षा और ज्योति केन्द्र प्रेक्षा के अभ्यास द्वारा होता था। शिविर में समणी विनयप्रज्ञाजी, समणी मल्लिप्रज्ञाजी, समणी मंजुलप्रज्ञाजी, समणी मृदुप्रज्ञाजी आदि समणीवृंद द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। सभी समणीवृंद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। प्रशिक्षक श्री महावीर प्रजापत एवं प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री उत्तमचंद बोहरा एवं डा. अशोक भास्कर आदि का सहयोग प्राप्त हुआ, सभी को हार्दिक साधुवाद। शिविर में विभिन्न पेशेवर चिकित्सक, चार्टर्ड अंकाउंटेंट, इंजीनियर एवं बुद्धिजीवी वर्ग सहित श्री जैन श्वेताम्बर मानव हितकारी संघ, राणावास की छात्राओं ने भाग लिया। शिविर में राजस्थान, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, अरुणाचल प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र, उड़ीसा, असम, पश्चिम बंगाल, गुजरात आदि विभिन्न राज्यों से लगभग 70 भाई–बहनों ने भाग लेकर प्रेक्षाध्यान, आसन–प्राणायाम, कायोत्सर्ग, श्वास प्रेक्षा, शरीर प्रेक्षा, चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा एवं शरीर विज्ञान आदि का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- **त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला** : परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में दिनांक 14 जून से 16 जून 2017 तक नमस्कार महामंत्र आधारित त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन विवेक विहार कोलकाता में किया गया। उक्त कार्यशाला में लगभग 550 व्यक्तियों द्वारा सहभागिता की गयी। सान्निध्य एवं उद्बोधन प्रदान करवाने हेतु पूज्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमणजी के महनीय मार्गदर्शन एवं सान्निध्य हेतु हार्दिक कृतज्ञता।

- **प्रेक्षा प्रशिक्षक योजना** : प्रेक्षा प्रशिक्षकों के निर्माण हेतु प्रेक्षा फाउण्डेशन के अन्तर्गत 'प्रेक्षा प्रशिक्षक योजना' जारी है। इसके अंतर्गत प्रेक्षाध्यान का एक समग्र नवीन पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षाओं का क्रम रखा गया है। यह परीक्षाएं उत्तीर्ण कर व्यक्ति प्रेक्षाध्यान का सम्यक् प्रशिक्षण प्राप्त कर कुशल प्रशिक्षक बनकर दीपक की तरह स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों के जीवन को भी प्रकाशित कर सकता है। प्रेक्षा फाउण्डेशन प्रशिक्षकों के निर्माण, उनसे नियमित संपर्क एवं प्रशिक्षण विधि की एकरूपता के लिए कटिबद्ध है। आलोच्य अवधि में 'प्रेक्षा प्रशिक्षक परीक्षाएं' कोलकाता, चेन्नई, लाडनूं, नागपुर एवं प्रेक्षा प्रशिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की नियमित कक्षाएं कोलकाता, नागपुर, सूरत, बैंगलोर में आयोजित की गई। इन कक्षाओं में सैंकड़ों भाई–बहिनों ने प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण लिया। वर्तमान में कुल 430 प्रेक्षा प्रशिक्षक, जिसमें कई विगत दिनों में नागपुर प्रेक्षा केन्द्र में आयोजित प्रेक्षा प्रशिक्षक लेवल 1 व 2 के प्रतिभागी भी शामिल हैं, देशभर में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। आलोच्य अवधि में निम्नलिखित स्थानों पर प्रेक्षा प्रशिक्षक शिविर आयोजित हुए–

प्रेक्षा प्रशिक्षक शिविर

क्र. सं.	दिनांक	शिविर का नाम	स्थान
01	नवम्बर 2016	प्रेक्षा प्रशिक्षक लेवल 1	मुम्बई
02	06–08 जनवरी 2017	प्रेक्षा प्रशिक्षक लेवल 1	कोलकाता
03	09–10 जनवरी 2017	प्रेक्षा प्रशिक्षक लेवल 1	चेन्नई
04	18–29 फरवरी 2017	प्रेक्षा प्रशिक्षक लेवल 1 एवं 2	तुलसी अध्यात्म नीडम्, लाडनूं
05	17–18 जून 2017	प्रेक्षा प्रशिक्षक लेवल 1	नागपुर

प्रेक्षा प्रशिक्षण परीक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम आदि तैयार करने तथा प्रेक्षा प्रशिक्षण संबंधी विभिन्न गतिविधियों में मार्गदर्शन, सहयोग व सेवाओं हेतु श्री एन. सी. जैन–नवी मुंबई, श्री माणकचंद रांका–पुत्तुर, श्री मनोज सुराणा–सूरत, श्री आनंदमल सेठिया–नागपुर, श्री डालमचंद सेठिया–बैंगलोर, श्री पारस दूगड़–कांदिवली (मुंबई), श्री गौतम गादिया–सूरत आदि के प्रति हार्दिक आभार।

आलोच्य अवधि में सम्पूर्ण देशभर के प्रेक्षा प्रशिक्षकों के नाम एवं अन्य जानकारी प्रेक्षा वेबसाईट **www.preksha.com** पर अपलोड की गयी। प्रेक्षा प्रशिक्षकों की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाये जाने में प्रेक्षा प्रशिक्षक संयोजक श्री एन.सी. जैन, मुम्बई का सहयोग प्राप्त हुआ अतएव हार्दिक आभार।

- **प्रेक्षाध्यान केन्द्रों को संबद्धता** : सम्पूर्ण देश भर में संचालित विभिन्न प्रेक्षाध्यान केन्द्रों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों को एकरूपता प्रदान करने की दृष्टि से प्रेक्षा फाउंडेशन के बैनर के अन्तर्गत संबद्धता प्रदान करने का कार्य किया गया। आलोच्य अवधि में नागपुर, चेन्नई, मणिनगर कांकरिया, गंगाशहर इत्यादि स्थानों पर संचालित प्रेक्षाध्यान केन्द्रों को प्रेक्षा फाउण्डेशन से संबद्धता प्रदान की गयी है। वर्तमान में देशभर में कुल 20 केन्द्र सम्बद्धता प्राप्त है।

- **प्रेक्षावाहिनी** : प्रेक्षाध्यान में रूचि रखने वाले साधकों के समूह का नाम है– प्रेक्षावाहिनी। साधकों में परस्पर संपर्क एवं संवाद बना रहे, इस दृष्टि से स्थानीय स्तर पर अनेक स्थानों पर प्रेक्षावाहिनी गठित हो चुकी है। प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को प्रेक्षावाहिनी द्वारा प्रेक्षाध्यान की एक घण्टे की एक ध्यान गोष्ठी आयोजित की जाती है। इस क्रम में अभी तक कुल 100 प्रेक्षावाहिनियां गठित हुई हैं एवं 32 प्रेक्षावाहिनीयां प्रस्तावित हैं। आलोच्य अवधि में कुल 49 नवीन प्रेक्षावाहिनीयों का गठन किया गया जो कि उड़ीसा, गुजरात, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, कर्नाटक, पंजाब, महाराष्ट्र इत्यादि राज्यों में गठित की गयी। नवीन प्रेक्षावाहिनीयों के माध्यम से विभिन्न राज्यों के सैकड़ों व्यक्ति प्रेक्षाध्यान विधा से जुड़ चुके हैं। वर्तमान में प्रेक्षावाहिनी के अन्तर्गत साधकों की संख्या 2323 है। प्रेक्षावाहिनी के संवाहक, सह संवाहक, सदस्य प्रेक्षाध्यान

के प्रचार–प्रसार करने के लिए कटिबद्ध हैं तथा जागरूकता के साथ स्वयं साधना के पथ पर अग्रेसित हैं एवं दूसरों को साधना के मार्ग पर बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। सभी के प्रति हार्दिक साधुवाद।

प्रेक्षावाहिनी के निदेशक मण्डल की सेवाओं व सहयोग हेतु हार्दिक आभार। इस वर्ष प्रेक्षा फाउण्डेशन के विशेष प्रयासों से अनेक स्थानों पर नवीन प्रेक्षावाहिनियों का गठन हुआ और विभिन्न क्षेत्रों में सैंकड़ों भाई–बहिन इस महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति से लाभान्वित हो रहे हैं। इस कार्य में डॉ. धारिणी जैन–ओडिशा, श्री प्रकाश दफ्तरी–अहमदाबाद एवं श्री मनीष बाफना–गंगाशहर का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ, एतदर्थ इनके एवं अन्य सभी सहयोगीगण के प्रति हार्दिक आभार।

- **प्रेक्षा कार्ड योजना :** आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र से अधिकाधिक लोग लाभान्वित हो सकें, इस दृष्टि से प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा 'प्रेक्षा कार्ड योजना' जारी है। इस योजना के अन्तर्गत चार तरह की श्रेणियां निर्धारित हैं– 1. प्रेक्षा सिल्वर कार्ड (सहयोग राशि रु. 25 हजार) 2. प्रेक्षा गोल्डन कार्ड (सहयोग राशि रु. 50 हजार) 3. प्रेक्षा प्लेटिनम कार्ड (सहयोग राशि रु. 1 लाख), एवं 4. प्रेक्षा एमरल्ड् कार्ड (सहयोग राशि रु. 5 लाख)। कोई भी व्यक्ति निर्धारित सहयोग राशि प्रदान कर श्रेणी अनुसार योजना की निर्धारित सुविधाओं के अन्तर्गत उक्त केन्द्र में आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविरों में सहभागिता कर लाभान्वित हो सकता है। आलोच्य अवधि में एक एमरल्ड् कार्ड, चार प्रेक्षा प्लेटिनम कार्ड एवं चार प्रेक्षा गोल्डन कार्ड की सदस्यता प्रदान की गई। सभी नए सदस्यों का प्रेक्षा फाउण्डेशन परिवार से जुड़ने पर हार्दिक स्वागत।
- **'आनन्द निलय' अतिथि गृह का निर्माण :** आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेन्टर के परिपार्श्व में आगन्तुक शिविरार्थियों की समुचित आवास व्यवस्था की सुविधार्थ 'आनन्द निलय' अतिथि गृह का निर्माण कार्य जारी है। लगभग 10 हजार वर्गफुट के प्रथम चरण का कार्य संपन्न हो चुका है एवं लगभग 8 हजार द्वितीय चरण का निर्माण कार्य द्रुतगति से जारी है। इस कार्य में पर्यवेक्षण एवं निर्देशन हेतु प्रदान की जा रही सेवाओं के लिए जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष श्री जोधराज बैद के प्रति हार्दिक आभार।
- **'प्रेक्षाध्यान' मासिक पत्रिका :** अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका 'प्रेक्षाध्यान' का विगत 37 वर्षों से जैन विश्व भारती के अन्तर्गत प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका की वर्तमान सदस्य संख्या 2570 है। वर्तमान में प्रेक्षाध्यान पत्रिका के प्रचार प्रसार हेतु कोलकाता निवासी महानुभाव से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है एवं 3 माह तक यह पत्रिका कोलकाता के 5000 तेरापंथी परिवारों को प्रेषित की जा रही है। सहयोगी महानुभाव के प्रति हार्दिक आभार।

  प्रेक्षाध्यान पत्रिका के संपादक के रूप में श्री लूणकरण छाजेड़, गंगाशहर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। श्री छाजेड़ भी कुशल लेखनी के धनी हैं तथा पत्रकारिता से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। आलोच्य अवधि में प्रेक्षाध्यान पत्रिका में शोध परिशिष्ट का विशेष रूप से संकलन किया जा रहा है। श्री लूणकरण छाजेड़ की सेवाओं हेतु आभार एवं उनके सफल संपादकीय कार्यकाल की मंगलकामना। सभी विज्ञापनदाताओं तथा पत्रिका के सदस्यता अभियान में सहयोगी व्यक्तियों एवं संस्थाओं के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **प्रेक्षा ई–बुक एवं आचार्य श्रीमहाप्रज्ञ जी के प्रेक्षाध्यान संबंधी वीडियो का सोशल मीडिया के माध्यम से प्रसारण :** एक नवीन प्रयास के द्वारा प्रेक्षाध्यान संबंधित विविध साहित्य का पीडीएफ फाईल के माध्यम से सोशल मीडिया के जरिए घर घर पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। अभी तक सोशल मीडिया के माध्यम से 26 ई–बुक प्रेक्षा पाठकों को प्रेषित की जा चुकी हैं एवं प्रति सप्ताह तीन ऑडियो एवं वीडियो प्रसारित किये जा रहे हैं। इस कार्य में वर्द्धमान ग्रंथागार, जैन विश्व भारती संस्थान का सहयोग प्राप्त हुआ, एतदर्थ हार्दिक आभार। संवाद प्रेषण के कार्य में श्री विमल घीया, अहमदाबाद का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार।
- **NACH खाता :** प्रेक्षा फाउण्डेशन की आर्थिक सुदृढ़ता हेतु आई.सी.आई.सी.आई. बैंक में NACH खाता खोला गया। इस खाते से संबंधी योजना अभी प्रस्तावित है तथा शीघ्र ही तैयार की जाएगी।

कृतज्ञता/आभार

प्रेक्षाध्यान प्रवृत्ति के विकास हेतु प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक आदरास्पद मुनिश्री कुमारश्रमणजी का महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन निरन्तर प्राप्त होता रहता है साथ ही गुरुकुलवास में आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविरों/कार्यशालाओं आदि में मुनिप्रवर का सान्निध्य व पाथेय प्राप्त होता है, इस हेतु मुनिश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। समय–समय पर देश के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित होने वाले प्रेक्षाध्यान शिविरों व कार्यशालाओं में सान्निध्य एवं प्रशिक्षण प्रदान करवाने हेतु चारित्रात्माओं एवं समणीवृंद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी द्वारा लाडनूं में आयोजित शिविर संचालन व्यवस्था में कुशल मार्गदर्शन प्रदान किया, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता। प्रेक्षा फाउण्डेशन के संयोजक श्री अरविन्द गोठी–दिल्ली एवं श्री अशोक चिंडालिया–मुंबई का समय–समय पर अपेक्षित सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, एतदर्थ हार्दिक आभार। प्रेक्षा प्रशिक्षकों, प्रेक्षावाहिनी संवाहकों आदि की सेवाओं व सहयोग हेतु आभार। प्रेक्षा फाउण्डेशन की व्यवस्थाओं के सुनियोजन में डॉ. विजयश्री शर्मा की सेवाओं हेतु धन्यवाद। तुलसी अध्यात्म नीडम् में कार्यरत प्रशिक्षक श्री महावीर प्रजापत तथा सहयोगी श्री श्रेयांस बेगवानी द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

अरविन्द संचेती
विभागाध्यक्ष
प्रेक्षा फाउण्डेशन

राजेन्द्र मोदी
संयोजक
प्रेक्षा फाउण्डेशन

साहित्य

साहित्य प्रकाशन जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान से संबंधित साहित्य के साथ पूज्यवरों, चारित्रात्माओं, समण–समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/संपादित साहित्य का प्रकाशन विगत 42 वर्षों से किया जा रहा है। आलोच्य अवधि में 16 शीर्षकों से नवीन पुस्तकों की 46877 प्रतियां तथा 25 शीर्षकों से पुर्नमुद्रित पुस्तकों की 52508 प्रतियां प्रकाशित की गई। आलोच्य अवधि में प्रकाशित पुस्तकों की सूची निम्नलिखित है–

नवीन साहित्य

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	लेखक/संपादक/वाचना प्रमुख	प्रतियां
01.	विवागसुयं (आगम)	आचार्य महाश्रमण (प्रधान संपादक)	527
02.	आवस्सयं (आगम)	आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ (वाचना प्रमुख) आचार्य महाश्रमण (प्रधान संपादक)	1000
03.	तेरापंथ प्रबोध	आचार्य तुलसी	6965
04.	रोज की एक सलाह (उड़िया भाषा)	आचार्य महाश्रमण	1000
05.	सुखी बनो (उड़िया भाषा)	आचार्य महाश्रमण	1000
06.	आओ हम जीना सीखें (उड़िया भाषा)	आचार्य महाश्रमण	1000
07.	18 पाप	आचार्य महाश्रमण	10000
08.	जय तिथि पत्रक 2074	'मंत्री मुनि' मुनि सुमेरमल	15050
09.	मेरी यात्रा : वीतरागता की ओर (मुनिश्री ताराचंदजी स्वामी की जीवनी)	मुनि ताराचंद	5000
10.	सफलता के सोपान	मुनि विजय कुमार	1000
11.	जैन परम्परा में समाधिमरण	मुनि मदनकुमार	250

12.	जीवन झांकी : मुनिश्री कन्हैयालालजी (मुनिश्री कन्हैयालालजी स्वामी की जीवनी)	मुनि कमलकुमार	1005
13.	मान से मानव मित्र (मुनिश्री मानवमित्रजी स्वामी की जीवनी)	साध्वी मधुस्मिता	1060
14.	समत्व की साधिका (साध्वीश्री फूलकुमारीजी की जीवनी)	साध्वी मंगलप्रभा	970
15.	स्मृतियों का अहसास	साध्वी कुंदनप्रभा एवं साध्वी विद्युत प्रभा	500
16.	Mahavira Sermons	श्रीचंद रामपुरिया (संपादक) धनराज बैद (अनुवादक)	550

पुर्नमुद्रण

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	लेखक / संपादक / वाचना प्रमुख	प्रतियां
01.	भिक्षु आगम विषय कोश भाग–1	आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ (वाचना प्रमुख) आचार्य महाश्रमण (प्रधान संपादक)	1786
02.	सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण	आचार्य तुलसी	9950
03.	जैन परम्परा का इतिहास	आचार्य महाप्रज्ञ	4200
04.	परिवार के साथ कैसे रहें	आचार्य महाप्रज्ञ	2000
05.	खोज समाधान की	आचार्य महाप्रज्ञ	1000
06.	जो सहता है वही रहता है	आचार्य महाप्रज्ञ	1000
07.	दुःख मुक्ति का मार्ग	आचार्य महाप्रज्ञ	1000
08.	The Path of Freedom from Sorrow	आचार्य महाश्रमण	5310
09.	Let us Learn to Live	आचार्य महाश्रमण	1000
10.	परम सुख का पथ	आचार्य महाश्रमण	1000
11.	निर्वाण का मार्ग	आचार्य महाश्रमण	1000
12.	आओ हम जीना सीखें (बंगाली)	आचार्य महाश्रमण	700
13.	रोज की एक सलाह (बंगाली)	आचार्य महाश्रमण	720
14.	रोज की एक सलाह कलैण्डर	आचार्य महाश्रमण	730
15.	Advice for Each Day (Calendar)	आचार्य महाश्रमण	504
16.	जैन विद्या भाग–1	मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन'	5020
17.	जैन विद्या भाग–2	मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन'	2221
18.	जैन विद्या भाग–3	मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन'	2225
19.	जीवन विज्ञान भाग–2 (अंग्रेजी)	मुनि किशनलाल	2100
20.	जीवन विज्ञान भाग–3 (अंग्रेजी)	मुनि किशनलाल	2216
21.	जीवन विज्ञान भाग–4 (अंग्रेजी)	मुनि किशनलाल	1097
22.	जीवन विज्ञान भाग–5 (अंग्रेजी)	मुनिश्री किशनलाल	1122
23.	जीवन विज्ञान भाग–6 (अंग्रेजी)	मुनिश्री किशनलाल	1099
24.	जीवन विज्ञान भाग–7 (हिन्दी)	मुनिश्री किशनलाल	1008
25.	कंठस्थ	संकलन	2500

अन्य उल्लेखनीय कार्य

- **साहित्य संपोषण योजना** : जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य के संपोषण, संवर्द्धन एवं व्यापक प्रचार–प्रसार की दृष्टि से जैन विश्व भारती के अन्तर्गत 'साहित्य संपोषण योजना' जारी है। इस योजना में समाज के अनेक उदारमना महानुभावों का सहयोग प्राप्त हो रहा है। सभी सहयोगी महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार।
- **महाप्रज्ञ वाङ्मय** : आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी के परिप्रेक्ष्य में आचार्यश्री महाश्रमणजी की दृष्टि के अनुसार जैन विश्व भारती को प्रदत्त आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य के संदर्भ में आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति के अन्तर्गत महाप्रज्ञ वाङ्मय का कार्य प्रारंभ हो चुका है। इस कार्य हेतु जैन विश्व भारती परिसर स्थित अमृतायन भवन के तीसरे विंग में 'महाप्रज्ञ वाङ्मय' कार्यालय का शुभारंभ हुआ। 'महाप्रज्ञ वाङ्मय' के कार्य हेतु परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का पावन आशीर्वाद एवं पथदर्शन प्राप्त हो रहा है, आचार्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। आचार्यप्रवर के इंगितानुसार 'महाप्रज्ञ वाङ्मय' का कार्य मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी के निर्देशन में संचालित है। मुख्य नियोजिकाजी के मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। इस कार्य में अनेक साध्वियों एवं समणीयों का समय व श्रम नियोजन हो रहा है, उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। मुख्य रूप से कार्य की देखरेख हेतु मुमुक्षु डॉ. शांता जैन एवं सुश्री वीणा जैन की सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री बी. रमेशचन्द बोहरा महाप्रज्ञ वाङ्मय की समस्त व्यवस्थाओं के नियोजन का कार्य स्वयं अत्यन्त जागरूकता के साथ देख रहे हैं, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति के संयोजक श्री सुरेन्द्र चोरड़िया के सहयोग हेतु आभार।
- **जैन विश्व भारती के साहित्य का प्रचार–प्रसार** : जैन विश्व भारती संस्थान द्वारा दिनांक 24–26 फरवरी 2017 को Engaging Jainism With Modern Issues विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार में जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित जैन विद्या से संबंधित साहित्य की स्टाल लगाई गई।
- **आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति की बैठके** : दिनांक 06 मार्च 2017 को आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति की एक बैठक का आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, करजाई बाजार (बिहार) में आयोजन हुआ। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आयोजित बैठक में संयोजक श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया, सदस्य श्री संजय धारीवाल, पदेन सदस्य श्री बी. रमेशचंद बोहरा एवं श्री धरमचंद लुंकड़ की उपस्थिति रही। पूज्य प्रवर का पावन पाथेय तथा मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी का महनीय मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, एतदर्थ हार्दिक कृतज्ञता।

  जैन विश्व भारती की आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति के अंतर्गत 'महाप्रज्ञ वाङ्मय' की एक बैठक दिनांक 18 मार्च 2017 को मध्याह्न 3.00 बजे महाप्रज्ञ वाङ्मय कार्यालय, अमृतायन–3, जैन विश्व भारती, लाडनूं में आयोजन हुआ, जिसमें महाप्रज्ञ वाङ्मय के अन्तर्गत संचालित कार्यों की समीक्षा की गई एवं कार्य की अपेक्षा के बारे में विचार–विमर्श किया गया। बैठक में समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी, समणी मधुरप्रज्ञाजी, समणी अक्षयप्रज्ञाजी, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री बी. रमेशचंद बोहरा, निवर्तमान अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़, मुमुक्षु डॉ. शांता जैन एवं सुश्री वीणा जैन की उपस्थिति रही।

  दिनांक 15 अप्रैल 2017 आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति की द्वितीय बैठक कॉन्फ्रेंस हॉल, जैन विश्व भारती सचिवालय में आयोजित हुई। इस बैठक में समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी, समणी अक्षयप्रज्ञाजी, समणी विनीतप्रज्ञाजी, समिति के संयोजक श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया, सदस्य श्री संजय धारीवाल, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री बी. रमेशचंद बोहरा, उपाध्यक्ष श्री जोधराज बैद, मुमुक्षु डॉ. शांता जैन एवं सुश्री वीणा जैन की उपस्थिति रही। महाप्रज्ञ साहित्य संबंधी कुछ महत्त्वपूर्ण चर्चा व चिंतन हुआ।
- **साहित्य के वेब पोर्टल पर साहित्य की उपलब्धता** : साहित्य के वेब पोर्टल पर साहित्य उपलब्ध कराने की दृष्टि से लगभग 115 पुस्तकें जैन विश्व भारती संस्थान से स्कैन करवाकर जैन विश्व भारती के

साहित्य वेब पोर्टल http://books.jvbharati.org पर अपलोड की गई है, इस कार्य हेतु जैन विश्व भारती संस्थान के प्रति हार्दिक आभार। साहित्य के वेब पोर्टल पर अब तक लगभग 270 पुस्तकें अपलोड की जा चुकी है, जो पाठकों के लिए ऑनलाईन पढ़ने हेतु उपलब्ध हैं। इस कार्य में श्री उमेश सेठिया, जलगावं के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

- **'Amazon' पर जैन विश्व भारती का साहित्य विक्रय हेतु उपलब्ध** : साहित्य की घर बैठे सहज सुलभता की दृष्टि से Online Shopping Store "Amazon" पर जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित कुछ चुनिंदा पुस्तकें विक्रय हेतु उपलब्ध कराई गई है। अनेक लोग घर बैठे ही जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तकें प्राप्त कर इस सुविधा का लाभ ले रहे हैं। इस कार्य में श्री कमल कटारिया, चेन्नई के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **विविध भाषाओं में साहित्य का अनुवाद** : आचार्यश्री महाश्रमणजी की कृतियों का विविध भाषाओं में अनुवाद करवाकर पुस्तकों का प्रकाशन कराया गया, जिससे आचार्यश्री महाश्रमणजी की देश के विभिन्न राज्यों में गतिमान अहिंसा यात्रा में विभिन्न प्रदेशवासियों को अपनी मातृ भाषा में पूज्यप्रवर की पावन लेखनी से लाभान्वित होने का अवसर प्राप्त हो सका। बंगाली भाषा में अनुवाद के कार्य में श्री सुरेन्द्र बोरड़–कोलकाता, श्री तरुण सेठिया–कोलकाता एवं श्री अशोक पारख–सिलीगुड़ी का सहयोग प्राप्त हुआ। उडिया भाषा के अनुवाद कार्य में श्री तुलसी जैन, तुषरा का सहयोग प्राप्त हुआ। सभी सहयोगी महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार।
- **साहित्य के समुचित संरक्षण की व्यवस्था** : साहित्य के समुचित संरक्षण की दृष्टि से जैन विश्व भारती के नाम से मुद्रित 5500 कार्टून बनवाये गये तथा गोदाम में साहित्य कार्टूनों में पैक कर रखा गया है ताकि पुस्तकें सुरक्षित रह सकें।
- **साहित्य गोदाम का सुसज्जीकरण** : जैन विश्व भारती स्थित साहित्य गोदाम में साहित्य के समुचित संधारण हेतु गोदाम के सुसज्जितकरण का कार्य एवं टाईल्स लगवाने का कार्य करवाया गया।
- **अनुबंध के अन्तर्गत पुस्तक प्रकाशन** : मुनिश्री किशनलालजी द्वारा लिखित एवं श्रीमती सुधामही रघुनाथन द्वारा अंग्रेजी भाषा में अनुवादित पुस्तक The Secret of Path Lives जैन विश्व भारती के साथ अनुबंध के अन्तर्गत बी. जैन पब्लिशर्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित की गई।

कृतज्ञता/आभार

आगम संपादन, साहित्य लेखन व सृजन कार्य में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का समय–समय पर प्रेरणादायी मार्गदर्शन प्राप्त होता है, एतदर्थ पूज्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। आचार्यप्रवर के निर्देशन में आगम संपादन एवं साहित्य संपादन के कार्य में 'आगम मनीषी' प्रोफेसर मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी, मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री जयकुमारजी, मुनिश्री कीर्तिकुमारजी, मुनिश्री विश्रुतकुमारजी, मुनिश्री जितेन्द्रकुमारजी, साध्वीश्री जिनप्रभाजी, साध्वीश्री मुदितयशाजी, साध्वीश्री श्रुतयशाजी, साध्वीश्री विमलप्रज्ञाजी, साध्वीश्री शुभ्रयशाजी, साध्वीश्री सुमतिप्रभाजी, प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञाजी आदि चारित्रात्माओं/समणीवृंद का श्रम मुखर होता है, तदर्थ सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। साहित्य संबंधी कार्यों में संलग्न सभी चारित्रात्माओं एवं समणीवृंद द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन हेतु कृतज्ञता। सभी विद्वान् लेखकगण के प्रति हार्दिक आभार।

साहित्य मुद्रण संबंध कार्य में पायोराईट प्रिंट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर के श्री संजय कोठारी, सांखला प्रिन्टर्स बीकानेर के श्री दीपचंद सांखला, वर्द्धमान प्रेस दिल्ली के श्री संजीव जैन एवं श्री रमेश खटेड़, चेन्नई के सहयोग हेतु हार्दिक साधुवाद। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य की वितरण व्यवस्था में श्री हेमराज श्यामसुखा–बैंगलोर, श्री भूरामल श्यामसुखा–इन्दौर, श्री दिलीप दूगड़–तेजपुर, श्री रतन श्यामसुखा–कोलकाता, श्री सुरेन्द्र ओसवाल–रायपुर, श्री सुखराज पितलिया–सिरियारी, श्री भरतभाई

शाह–सूरत, श्री अशोक पारख–सिलीगुड़ी, श्री तुलसी जैन–तुसरा, श्री पुखराज बडोला–चेन्नई, श्री बजरंग कुमार सेठिया–सिलीगुड़ी, तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन–मुंबई (कांदिवली), साहित्य सरिता–अहमदाबाद, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान–गंगाशहर, जय साहित्य संस्थान–चेन्नई, तेरापंथी सभा–सूरत, तेरापंथी सभा–दक्षिण दिल्ली, तेरापंथी सभा–शाहदरा, तेरापंथी सभा–रोहिणी, तेरापंथी सभा–सिलीगुडी, तेरापंथ युवक परिषद्–सूरत, तेरापंथ युवक परिषद्–उधना, तेरापंथ युवक परिषद–जयपुर आदि के सहयोग व सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। साहित्य के प्रचार–प्रसार में स्थानीय संघीय संस्थाओं व कार्यकर्ताओं के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

जैन विश्व भारती साहित्य विभाग के प्रभारी श्री जगदीश प्रसाद, सहायक प्रभारी श्री पंकज महर्षि, आचार्यप्रवर के साथ यात्रा में संचालित साहित्य विक्रय केन्द्र के प्रभारी श्री नंदराम सिमार एवं अन्य कर्मचारियों द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

धरमचंद लुंकड़
विभागाध्यक्ष, साहित्य विभाग

हेमराज शामसुखा
संयोजक, साहित्य विभाग

शोध

आगम–संपादन

जैन विश्व भारती की स्थापना के मूलभूत उद्देश्यों में शोध का स्थान सर्वोपरि रहा है। प्रारंभ से ही गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी ने इसे जैन धर्म, दर्शन, अध्यात्म आदि के एक उच्चस्तरीय शोध–संस्थान के रूप में परिकल्पित किया था। आगम संपादन, अनुवाद, भाष्य (या टिप्पण) आदि का कार्य इसी शोध–प्रवृत्ति के अंतर्गत जारी है। यह कार्य पूर्व में वाचना–प्रमुख आचार्य तुलसी एवं मुख्य संपादक विवेचक आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के निर्देशन में चला। वर्तमान में मूलतः समग्र आगम कार्य का प्रधान संपादन आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत आगमों के अनुवाद, टिप्पण, विभिन्न प्रकार के कोश निर्माण आदि की योजनाएं चल रही हैं। इसके प्रबंधन, मुद्रण, प्रचार–प्रसार आदि का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जा रहा है।

01. भगवई खण्ड 5 (सभाष्य) जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

02. मुख्य नियोजिकाजी साध्वीश्री विश्रुतविभाजी द्वारा 'आगमों में आत्मवाद' पर शोधपूर्ण संकलन का कार्य चल रहा है।

03. 'पन्नवणा' के अनुवाद आदि का कार्य मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, साध्वीश्री श्रुतयशाजी एवं साध्वीश्री मुदितयशाजी द्वारा गतिमान है।

04. 'आगम मनीषी' प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी द्वारा 'भगवई' (भाष्य सहित) 6वें खण्ड का कार्य चल रहा है। इसमें शतक 21, 22, 23 का भाष्य लिखा जा रहा है। इसमें वनस्पति विज्ञान के संबंध में विस्तृत भाष्य है। 24वें शतक का कार्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा पहले ही संपन्न किया जा चुका है।

    भगवई के प्रथम खण्ड का द्वितीय संस्करण प्रकाशनाधीन है।

    'सूयगड़ो' के अंग्रेजी अनुवाद चैप्टर 1 व 6 का कार्य संपन्न हो चुका है। परिशिष्टों का कार्य भी संपन्न हो चुका है।

05. 'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी द्वारा संपादित आगम ग्रंथ 'आवस्सयं' प्रकाशित हो चुका है।

06. मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री योगेशकुमारजी द्वारा 'अंतकृतदशा' एवं 'जीवाजीवाभिगम' आगम ग्रंथ का कार्य गतिमान है।

07. मुनिश्री जयकुमारजी द्वारा 'अनुत्तरौपपातिकदशा' आगम ग्रंथ का कार्य गतिमान है।

08. डॉ. मुनिश्री अभिजितकुमारजी एवं मुनिश्री सिद्धकुमारजी द्वारा भगवई भाष्य के तीसरे खण्ड के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य रोमनलिपि के साथ किया जा रहा है।

09. साध्वीश्री जिनप्रभाजी द्वारा 'रायपसेणिय' आगम ग्रंथ का कार्य प्रायः संपन्न हो चुका है।

10. साध्वीश्री विमलप्रज्ञाजी और साध्वीश्री उदितयशाजी द्वारा संपादित 'विवागसुयं' आगम ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है।

11. साध्वीश्री श्रुतयशाजी द्वारा 'आयारचूला' आगम ग्रंथ का कार्य प्रायः संपन्न हो चुका है।

12. साध्वीश्री मुदितयशाजी द्वारा 'निरयावलिका' आदि पांच उपांगों का कार्य प्रगति पर है।

13. साध्वीश्री राजुलप्रभाजी 'ज्ञाताधर्म कथा' के संस्कृत रूपान्तरण के कार्य में संलग्न है।

14. प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञाजी द्वारा 'आवश्यक निर्युक्ति' के दूसरे खंड का अनुवाद, संपादन एवं परिशिष्ट का कार्य प्रकाशनाधीन प्रक्रिया में है तथा पंचकल्पभाष्य के संपादन और अनुवाद का कार्य प्रायः संपन्न हो चुका है।

15. 'उत्तरज्झयणाणि' एवं 'ठाणं' आगम ग्रंथों का पुर्नमुद्रण का कार्य प्रगति पर है।

आगम–संपादन संबंधी जैन शासन की प्रभावना का विशिष्ट कार्य परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के मुख्य निर्देशन में हो रहा है, इस हेतु हार्दिक कृतज्ञता। इस कार्य में संलग्न उक्त उल्लेखित समस्त चारित्रात्माओं एवं समणीवृंद के प्रेरणास्पद श्रम हेतु हार्दिक कृतज्ञता।

कम्प्यूटर संबंधी कार्य में कार्यालय में कार्यरत श्री निमाई चरण त्रिपाठी, श्री प्रमोद कुर्मी, श्रीमती कुसुम जैन आदि द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

मनोज कुमार लूनिया
विभागाध्यक्ष, शोध विभाग

प्रमोद बैद
संयोजक, शोध विभाग

हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग

जैन विश्व भारती में अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ जैन हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध हैं जिनकी सुरक्षा एवं संरक्षण जैन विश्व भारती के हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग के अंतर्गत किया जा रहा है। इनकी सुरक्षा और संरक्षण की दृष्टि से विशेषज्ञ टीमों ने समय–समय पर दौरा कर अपने अमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए हैं और उनके निर्देशानुसार हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को इनकी सुरक्षा की दृष्टि से निर्मित विशेष प्रकार की लकड़ी की बनी पेटियों में रखा गया है। वर्तमान में इन पांडुलिपियों की संख्या 3122 है जो 364 पेटियों में गोदरेज की आलमारियों में सुरक्षित हैं। इनकी ग्रंथ सूची में पत्र संख्या, लिपि संवत, लिपिकर्ता, लिपि स्थान, रचनाकार आदि का उल्लेख किया हुआ है। वर्तमान में इस विभाग को मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' के मार्गदर्शन में मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं मुनिश्री जयंतकुमारजी का निर्देशन प्राप्त है। मुनिद्वय के प्रति हार्दिक कृतज्ञता।

समन्वय

पुरस्कार एवं सम्मान

जैन विश्व भारती द्वारा कुल 10 पुरस्कारों का संचालन विभिन्न प्रायोजकों के सहयोग से किया जा रहा है।

आचार्य तुलसी अनेकांत सम्मान

प्रायोजक : एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता
पुरस्कार राशि : 1,51,000/– प्रतिवर्ष

आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा सम्मान

प्रायोजक : एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता
पुरस्कार राशि : 1,51,000/– प्रतिवर्ष

महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषा पुरस्कार

प्रायोजक : एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता
पुरस्कार राशि : 1,00,000/– प्रतिवर्ष

गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार

प्रायोजक : एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता
पुरस्कार राशि : 1,00,000/– प्रतिवर्ष

जय तुलसी विद्या पुरस्कार

प्रायोजक : चौथमल कन्हैयालाल सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत
पुरस्कार राशि : 2,00,000/– प्रतिवर्ष

संघ सेवा पुरस्कार

प्रायोजक : नेमचंद जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता
पुरस्कार राशि : 1,25,000/– प्रतिवर्ष

आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार

प्रायोजक : के. बी. डी. फाउण्डेशन, कोलकाता
पुरस्कार राशि : 1,00,000/– प्रतिवर्ष

आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार

प्रायोजक : सूरजमल सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, गुवाहाटी
पुरस्कार राशि : 1,00,000/– प्रतिवर्ष

प्रज्ञा पुरस्कार

प्रायोजक : श्री उम्मेदसिंह, विनोदसिंह, दिलीप दूगड़, तुरा–हैदराबाद–गुवाहाटी
पुरस्कार राशि : 1,00,000/– प्रतिवर्ष

जीवन विज्ञान पुरस्कार

प्रायोजक : नाहटा चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता
पुरस्कार राशि : 1,00,000/– प्रतिवर्ष

सभी पुरस्कार प्रायोजक परिवारों/ट्रस्टों के प्रति हार्दिक आभार।

विदेशों में केन्द्र

विदेशों में जैन दर्शन, जैन विद्या एवं जैन संस्कृति के प्रचार–प्रसार एवं संस्कार निर्माण व जैन संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से जैन विश्व भारती के नाम से केन्द्र संचालित हो रहे हैं, जिनकी जानकारी अग्रलिखित है–

- **Jain Vishva Bharati, USA (Orlando)**
  7819 Lillwill Avenue, Orlando
  FI 32809 (USA)
  Tel. : 407-852-8694
  E-mail : jainvishwa1@gmail.com
  वर्ष 2016–17 में प्रवासित समणीवृंद :
  समणी भावितप्रज्ञा एवं समणी रत्नप्रज्ञा

- **Jain Vishva Bharati, Houston**
  1712 Hwy 6 South Houston
  Texas 77077 (USA)
  Tel. : 281-596-9642, 281-495-9733
  E-mail : jvbtexas@yahoo.com
  वर्ष 2016–17 में प्रवासित समणीवृंद :
  समणी कंचनप्रज्ञा एवं समणी प्रणवप्रज्ञा

- **Jain Vishva Bharati, NA (New Jersey)**
  151 Middle Sex Avenue
  Iseline, NJ-08830 USA
  Tel. : 0732-404-1430
  E-mail : jvbnj@yahoo.com
  वर्ष 2016–17 में प्रवासित समणीवृंद :
  समणी सन्मतिप्रज्ञा एवं समणी जयन्तप्रज्ञा

उपर्युक्त केन्द्रों में प्रवासित समणीवृंद के सान्निध्य में संस्कार निर्माण एवं जैन विद्या से संबंधित विभिन्न गतिविधियां सुचारु रूप से संचालित हैं। विदेशों में प्रवासित अनेक जैन परिवारों से समय–समय पर जैन विश्व भारती की गतिविधियों हेतु सहयोग प्राप्त हुआ। सभी सहयोगी परिवारों के प्रति हार्दिक आभार। केन्द्रों के पदाधिकारीगण एवं सक्रिय रूप से जुड़े कार्यकर्तागण के सहयोग एवं सेवाओं हेतु आभार।

संस्कृति

तुलसी कला दीर्घा

गणाधिपति पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी की पुण्य स्मृति में जैन विश्व भारती में स्थापित तुलसी कला दीर्घा (आर्ट गैलरी) आने वाले हर वर्ग के दर्शक को प्रभावित करती हैं। कला केन्द्र में जैन धर्म को दर्शाने वाली प्राचीन एवं अर्वाचीन चित्रों एवं हस्तकलाओं की प्रचुर सामग्री का संग्रह किया गया है। दुर्लभ, कलापूर्ण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व की प्रदर्शन योग्य सामग्री के साथ तेरापंथ के आचार्यों को सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से संबंधित प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र तथा अन्य सामग्री को यहां पर शो विंडो में कलापूर्ण ढ़ंग से सुसज्जित किया गया है। मूल दीर्घा में ऐतिहासिक दस्तावेज, चित्र, रेखांकन तथा हस्तलेखों का विशाल संग्रह 40 टेबल शोकेसों में प्रदर्शित किया गया है। नारियल, काष्ठ, तुम्बा और कागज की लुग्दी एवं जीर्ण–शीर्ण कपड़े से बनी अद्भुत कलापूर्ण सामग्री यहां प्रदर्शित है।

आलोच्य अवधि में देश–विदेश के सैकड़ों दर्शनार्थियों ने कला प्रेक्षा का अवलोकन किया। तुलसी कला दीर्घा के विकास हेतु जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं मुनिश्री जयंतकुमारजी का भी समय–समय पर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है, एतदर्थ हार्दिक कृतज्ञता।

: प्रस्तुति :

महेन्द्र कुमार जैन
संयुक्त संयोजक, तुलसी कला दीर्घा

कमल चन्द टी. बैद
संयुक्त संयोजक, तुलसी कला दीर्घा

अन्य उल्लेखनीय कार्य

- **जैन विश्व भारती की नवनिर्वाचित टीम का अभिनंदन :** दिनांक 04 अक्टूबर 2016 को जैन विश्व भारती के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री बी. रमेशचंद बोहरा एवं उनकी टीम का स्वागत एवं अभिनंदन समारोह का आयोजन सुधर्मा सभा, जैन विश्व भारती में आयोजित किया गया। माल्यार्पण–शाल्यार्पण के साथ एवं जैन विश्व भारती संस्थान द्वारा प्रतीक चिह्न प्रदान कर समागत पदाधिकारीगण व न्यासीगण का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में जैन विश्व भारती व जैन विश्व भारती संस्थान के समस्त अधिकारीगण, कर्मचारीगण, लाडनूं नगर के प्रशासनिक अधिकारीगण, नगर की विभिन्न संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण आदि उपस्थित रहे एवं नवनिर्वाचित टीम के सफल कार्यकाल की मंगलकामना की।
- **मुनिश्री स्वस्तिककुमारजी एवं सहवर्ती मुनिवृंद का जैन विश्व भारती सेवा केन्द्र में मंगल प्रवेश :** दिनांक 09 फरवरी 2017 को मुनिश्री स्वस्तिककुमारजी एवं सहवर्ती मुनिवृंद का चाकरी हेतु जैन विश्व भारती सेवा केन्द्र में प्रवेश हुआ। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगणों ने मुनिवृंद की अभिवंदना कर उनका स्वागत किया तथा मुनिश्री स्वस्तिककुमारजी ने विगत एक वर्ष से चाकरी हेतु नियुक्त 'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी के संरक्षण में चाकरी का औपचारिक दायित्व ग्रहण किया।
- **'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी एवं सहवर्ती मुनिवृंद का जैन विश्व भारती सेवा केन्द्र से मंगल विहार :** 'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी एवं सहवर्ती मुनिवृंद का जैन विश्व भारती सेवा केन्द्र में एक वर्ष की चाकरी–सेवा के पश्चात् दिनांक 15 फरवरी 2017 को जैन विश्व भारती से मंगल विहार हुआ। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री बी. रमेशचंद बोहरा, मुख्य न्यासी श्री पुखराज बडोला एवं संयुक्त मंत्री श्री जीवनमल जैन (मालू) विशेष रूप से उपस्थित थे। जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान परिवार सहित नगर के धर्मावलंबियों की उपस्थिति रही।
- **जैन विश्व भारती में 108 फीट ऊंचे जैन ध्वज की स्थापना :** भिक्षु विहार एवं अहिंसा भवन के मध्य स्थित 108 फीट ऊंचे पंच परमेष्ठी के प्रतीक जैन ध्वज का लोकार्पण दिनांक 20 मार्च 2017 को जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री बी. रमेशचंद बोहरा एवं निवर्तमान अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़ द्वारा किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ विकास परिषद् के संयोजक श्री कन्हैयालाल छाजेड़ विशेष रूप से उपस्थित थे। इस कार्य में देश के प्रमुख औद्योगिक घराने जिन्दल समूह सहयोग प्राप्त हुआ, जिन्दल परिवार के सहयोग हेतु हार्दिक आभार। इस कार्य में जैन विश्व भारती के संचालिका समिति सदस्य श्री प्रमोद जैन, बरवाला की उल्लेखनीय भूमिका हेतु हार्दिक आभार।
- **परिसर में नए आर. ओ. प्लांट की स्थापना :** परिसर में पीने के पानी की सुविधार्थ 2000 लीटर प्रति घंटे की क्षमता वाला एक नया आर.ओ. प्लांट क्रय किया गया है। पूर्व में अवस्थित प्लांट काफी पुराना हो चुका है। अतः एक नया आर. ओ. प्लांट और लगाया गया है।
- **भंवरलाल रायकंवरी देवी जैन विद्या विकास निधि :** चाड़वास निवासी सण्डूर–बैंगलोर प्रवासी श्री नवरत्नमल–कुमुद बच्छावत द्वारा वर्ष 2009 में अपनी माताजी के 75वें जन्मदिवस पर जैन विश्व भारती को जैन विद्या के विकास हेतु रु. 75 लाख की राशि अनुदान स्वरूप प्रदान की गई थी। यह राशि जैन विश्व भारती के अन्तर्गत 'भंवरलाल रायकंवरी देवी जैन विद्या विकास निधि' के नाम से गठित एक विशेष कोष में जमा है, जिससे प्रति वर्ष उपार्जित ब्याज की आय को जैन विद्या के विकास संबंधी कार्यों में खर्च किया जाता है। अनुदानदाता परिवार के उदार सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **कोठारी परिवार, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़) द्वारा विशिष्ट सहयोग :** राजनांदगांव (छत्तीसगढ़) के प्रतिष्ठित व संघनिष्ठ कोठारी परिवार के श्री प्रकाशचंद कोठारी द्वारा वर्ष 2014 में एवं वर्ष 2015 में जैन विश्व भारती की गतिविधियों के विकास हेतु सहयोगस्वरूप अपनी राजनांदगांव स्थित दो अचल सम्पत्तियां जैन

विश्व भारती को अनुदानस्वरूप प्रदान की। किसी अनुदानदाता द्वारा स्वैच्छिक रूप से इस प्रकार का बड़ा अनुदान वास्तव में आचार्य तुलसी के विसर्जन के सूत्र का बहुत अच्छा उदाहरण तथा समाज के लिए प्रेरक प्रसंग है। श्री प्रकाशचंद कोठारी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती साधना कोठारी की निस्पृह भावना का सम्मान करते हुए उनके इतने बड़े उदार सहयोग के लिए हार्दिक आभार–साधुवाद। अचल सम्पत्ति के विक्रय संबंधी समस्त औपचारिकताओं की पूर्ति में जैन विश्व भारती के न्यासी श्री प्रमोद बैद एवं संचालिका समिति सदस्य श्री दानमल पोरवाल, भिलाई तथा श्री संजय कोठारी, रायपुर के विशेष सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

- **जैन विश्व भारती के कर्मचारियों का कर्मचारी भविष्य निधि एवं कर्मचारी राज्य बीमा में पंजीयन :** विगत वर्ष से प्रभावी राज्य सरकार के नियमानुसार जैन विश्व भारती के कर्मचारियों का कर्मचारी भविष्य निधि संगठन में एवं कर्मचारी राज्य बीमा में पंजीयन इस वर्ष जुलाई 2017 से किया जा चुका है। पूर्व में वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में कर्मचारी सुरक्षा कोष का प्रावधान किया हुआ था।
- **परिसर हरितीकरण एवं आंवला गार्डन का निर्माण :** जैन विश्व भारती परिसर की सौंदर्य वृद्धि तथा पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से परिसर में विभिन्न प्रकार के पौधों का रोपण किया गया है। परिसर में लगभग 200 आंवले के पौधे लगाकर एक अलग आंवला गार्डन विकसित किया गया है। सुरक्षा व सुंदरता की दृष्टि से पूरे गार्डन की लोहे की जाली से निर्मित चारदिवारी बनाई गई है और प्रत्येक पौधे हेतु ट्री गार्ड बनाया गया है। परिसर हरीतीकरण और आंवला गार्डन के निर्माण हेतु जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री बी. रमेशचंद बोहरा की विशेष प्रेरणा एवं प्रयास रहा, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार। इस कार्य में जैन विश्व भारती के बागवान श्री खींवराज माली के श्रम हेतु धन्यवाद।

श्रद्धाप्रणति

जैन विश्व भारती की प्रत्येक गतिविधि के सशक्त आधार हैं हमारे पूज्यवर आचार्यश्री महाश्रमणजी। पूज्यश्री द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन और संप्रेषित ऊर्जा ही हमें निरन्तर विकासोन्मुख रखती है। पूज्यप्रवर के असीम अनुग्रह के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए हर शब्द अल्प है। हम पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अपनी अनंत–अनंत श्रद्धा समर्पित करते हैं। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के पावन पथ प्रदर्शन एवं कृपादृष्टि हेतु हार्दिक कृतज्ञता। 'मुख्य मुनि' मुनिश्री महावीरकुमारजी, 'शासन स्तम्भ' 'मंत्री मुनि' मुनिश्री सुमेरमलजी, 'मुख्य नियोजिका' साध्वीश्री विश्रुतविभाजी एवं 'साध्वीवर्या' साध्वीश्री संबुद्धयशाजी के प्रेरक मार्गदर्शन हेतु हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक आदरास्पद मुनिश्री कीर्तिकुमारजी का विभिन्न गतिविधियों के विकास हेतु सम्यक् चिंतन एवं प्रेरक मार्गदर्शन निरन्तर प्राप्त होता रहता है, इस हेतु मुनिप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता।

जैन विश्व भारती की आध्यात्मिक गतिविधियों के सम्यक् संचालन व इसको गतिमान रखने के लिए 'शासनश्री' मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन', 'प्रेक्षा प्राध्यापक' प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी, 'शासनश्री' मुनिश्री किशनलालजी, मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री जयकुमारजी, मुनिश्री रजनीशकुमारजी, मुनिश्री विश्रुतकुमारजी, मुनिश्री जितेन्द्र कुमार जी आदि मुनिवृंद एवं साध्वीश्री जिनप्रभाजी, 'शासनगौरव' साध्वीश्री कल्पलताजी, 'शासनश्री' साध्वीश्री विमलप्रज्ञाजी, साध्वीश्री सुमतिप्रभाजी आदि साध्वीवृंद का हमेशा मौलिक चिंतन प्राप्त होता रहता है, एतदर्थ सभी चारित्रात्माओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता।

जैन विश्व भारती सेवाकेन्द्र में वर्तमान में प्रवासित सेवाकेन्द्र व्यवस्थापक मुनिश्री स्वस्तिककुमारजी तथा पूर्व चाकरी में प्रवासित 'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी आदि मुनिवृंद का संस्था की विभिन्न प्रवृत्तियों में मार्गदर्शन तथा कार्यक्रमों में सान्निध्य प्राप्त हुआ, इस हेतु सभी मुनिवृंद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी, पूर्व समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी, समणी कुसुमप्रज्ञाजी, समणी अक्षयप्रज्ञाजी आदि समणीवृंद का विशेष दिशा–निर्देशन समय–समय पर प्राप्त होता रहता है, एतदर्थ कृतज्ञता। इनके अतिरिक्त समस्त चारित्रात्माओं एवं समण–समणीवृंद के प्रेरक मार्गदर्शन हेतु कृतज्ञता।

विनम्र श्रद्धांजलि

आलोच्य वर्ष में अनेक चारित्रात्माओं ने अपनी संयम यात्रा संपन्न कर पंडित मरण को प्राप्त किया है। मैं सभी दिवंगत चारित्रात्माओं को जैन विश्व भारती परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए उनके उतरोत्तर आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना करता हूँ।

आलोच्य वर्ष के दौरान दिवंगत हुए जैन विश्व भारती के सदस्यगण को सादर श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

आभार ज्ञापन

जैन विश्व भारती का वार्षिक प्रतिवेदन संपन्न करने के साथ मैं उन सभी महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहूंगा जिन्होंने अपना अमूल्य समय और श्रम देकर संस्था की प्रवृत्तियों को उत्तरोत्तर उन्नत बनाने में अपना पूर्ण योगदान दिया।

मैं सर्वप्रथम जैन विश्व भारती के ऊर्जाशील, कर्मठ अध्यक्ष श्री बी. रमेशचंद बोहरा के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। जिनके कुशल मार्गदर्शन में संस्था का विकास कार्य निरन्तर गतिमान रहा और गतिविधियों को विकास का नया आयाम मिला। कुलपति 'शासनसेवी' श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी के सहयोग भाव हेतु हार्दिक आभार। मुख्य न्यासी श्री पुखराज बडोला के उल्लेखनीय सहयोग हेतु हार्दिक आभार। वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार संचेती, उपाध्यक्ष श्री जोधराज बैद, श्री ओम जालान, श्री तनसुखलाल नाहर, श्री विमलचंद रूणवाल, संयुक्त मंत्री श्री जीवनमल जैन (मालू), एवं श्री मनोज कुमार दूगड़ हमारी विभिन्न प्रवृत्तियों के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे, सभी के प्रति हार्दिक आभार। कोषाध्यक्ष श्री गौरव जैन मांडोत का लेखा संबंधी एवं विभिन्न कार्यों हेतु निरन्तर सहयोग मिलता रहा, एतदर्थ आभार। न्यासी श्री भागचंद बरड़िया, श्री भैरूलाल चोपड़ा, श्री डी. गौतमकुमार सेठिया, श्री ललित कुमार दूगड़, श्री महेन्द्र कुमार जैन, श्री मनोज लूनिया एवं श्री प्रमोद बैद के समय–समय पर प्राप्त सहयोग व सहभागिता हेतु हार्दिक आभार। पंचमण्डल के सदस्यों के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

परामर्शक मण्डल के सदस्यों के मार्गदर्शन हेतु हार्दिक आभार। जैन विश्व भारती की संचालिका समिति के सभी सदस्यों के सहयोग व सेवाओं हेतु हार्दिक आभार।

शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष श्री टी. अमरचंद लुंकड़, विमल विद्या विहार प्रबंधन समिति के संयुक्त संयोजक श्री पुखराज बडोला एवं श्री तनसुख नाहर, महाप्रज्ञ इंटरनेशन स्कूल टमकोर प्रबंधन समिति के संयोजक श्री रणजीतसिंह कोठारी, सह–संयोजक श्री ललित कुमार दूगड़, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल जयपुर प्रबंधन समिति के संयुक्त संयोजक श्री गौरव जैन मांडोत एवं श्री पन्नालाल पुगलिया, समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष श्री मालचंद बेगानी, संयोजक श्री पन्नालाल पुगलिया, श्री महेन्द्र सेठिया, श्री महावीर धारीवाला, जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष श्री डी. गौतम कुमार सेठिया, प्रेक्षा फाउण्डेशन के विभागाध्यक्ष श्री अरविंद कुमार संचेती, संयोजक श्री अरविंद गोठी, श्री अशोक चिंडालिया, श्री राजेन्द्र मोदी, साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़, संयोजक श्री हेमराज श्यामसुखा, शोध विभाग के विभागध्यक्ष श्री मनोज कुमार लूनिया, संयोजक श्री प्रमोद बैद, तुलसी कला दीर्घा के संयुक्त संयोजक श्री महेन्द्र कुमार जैन, श्री कमलचंद टी. बैद, परिसर निर्माण कार्य समिति के संयुक्त संयोजक श्री जोधराज बैद, श्री जी. गौतमचंद धारीवाल, सह–संयोजक श्री प्रमोद जैन, कानूनी सलाहकार समिति के संयुक्त संयोजक श्री अशोक कुमार जे. डागा, श्री जे. गौतमचंद सेठिया, मीडिया एवं प्रचार प्रसार विभाग के संयोजक श्री महावीर बी. सेमलानी, सह–संयोजक श्री संजय कुमार वेदमेहता आदि ने जैन विश्व भारती की गतिविधियों को अपने श्रम, सहयोग एवं सहभागिता से गति प्रदान की है, एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक आभार।

तेरापंथ विकास परिषद् के संयोजक आदरणीय श्री कन्हैयालाल छाजेड़, जैन विश्व भारती के निवर्तमान अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़, पूर्व न्यासी श्री मूलचंद नाहर आदि का समय–समय पर बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त हुआ, एतदर्थ हार्दिक आभार। सभी केन्द्रीय एवं स्थानीय संघीय संस्थाओं से प्राप्त सहयोग के लिए हार्दिक आभार।

जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों, इकाईयों, आयोजनों आदि में समाज के उदारमना महानुभावों ने मुक्तहस्त सहयोग प्रदान कर संस्था की विकास यात्रा को गति प्रदान की है। उन सभी अनुदानदाताओं के प्रति बहुत–बहुत आभार–धन्यवाद जिनके उल्लेखनीय सहयोग से संस्था ने विकास के नये पायदान पर आरोहण किया।

जैन विश्व भारती के अंकेक्षक के रूप में एन. के. बोरड़ एण्ड कंपनी, जयपुर की सेवाओं हेतु हार्दिक धन्यवाद।

राजस्थान सरकार, नागौर जिला प्रशासन, नगरपालिका मण्डल, लाडनूं, स्थानीय प्रशासन, रजिस्ट्रार ऑफ सोसायटी, लाडनूं के सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विभागों, लाडनूं की सभी संघीय एवं सामाजिक संस्थाओं एवं स्थानीय व्यक्तियों के सहयोग हेतु हार्दिक धन्यवाद। केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं नागौर सांसद श्री सी. आर. चौधरी तथा लाडनूं विधायक ठाकुर मनोहरसिंहजी के सहयोग हेतु विशेष रूप से आभार। जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) परिवार के सहयोग हेतु आभार।

जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ का विभिन्न प्रवृत्तियों एवं व्यवस्थाओं के सुचारु संचालन में महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यालय के विभिन्न कार्यों की सुचारु व्यवस्था तथा विधिक व मानव संसाधन कार्यों में डॉ. विजयश्री शर्मा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। लेखा संबंधी कार्य में लेखा विभाग के प्रमुख श्री दिनेश सोनी, श्री जयप्रकाश सांखला एवं श्री बृजमोहन शर्मा, कार्यालय सहायक एवं कैशियर के रूप में श्री संजय बोथरा, कम्प्यूटर संबंधी कार्यों में श्री मनीष भोजक, परिसर की व्यवस्थाओं में श्री सुशील मिश्रा, श्री संपतराज खटेड़, भोजनशाला संबंधी व्यवस्थाओं में श्री चंदनमल भोजक, भण्डार संबंधी कार्यों में श्री जोगेन्द्र सिंह सांखला, बिजली–पानी संबंधी व्यवस्थाओं में श्री राजेश भदौरिया आदि ने निष्ठापूर्वक अपने दायित्व का निर्वहन किया है। कोलकाता कार्यालय में कार्यरत श्री संपतमल बैंगानी एवं श्रीमती मधुमिता गुहा ने भी सम्यक् दायित्व निर्वहन किया है। सभी कर्मीगण प्रदत्त दायित्व का निष्ठाभाव से निर्वहन करते हैं, जिनसे संस्था की गतिविधियों को गति प्राप्त होती है। सभी कर्मीगणों को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद।

केन्द्र के साथ संवादों के संप्रेषण में श्री हेमन्त बैद, श्री आकाश सैन एवं श्री बबलू का भी निरन्तर सहयोग मिलता रहा, इस हेतु आभार। जैन विश्व भारती की सूचनाओं एवं समाचारों के संप्रेषण व्यवस्थित और नियमित रूप से करने हेतु स्थानीय सभी दैनिक समाचार पत्रों एवं अखिल भारतीय तेरापंथ टाईम्स, विज्ञप्ति, अणुव्रत आदि सभी संघीय एवं सामाजिक पत्र–पत्रिकाओं के प्रति आभार। संस्कार चैनल व पारस चैनल पर सूचनाओं व कार्यक्रमों के प्रसारण में सहयोग हेतु अमृतवाणी के प्रति आभार। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों व कार्यक्रमों की जानकारी सोशल मीडिया नेटवर्क JTN (जैन तेरांपथ समाचार 'जैतस') के माध्यम से वृहद् रूप में प्रसारित करने हेतु JTN की पूरी टीम के सहयोग हेतु आभार।

जैन विश्व भारती सेवाकेन्द्र में विराजित मुनिवृंद की अपेक्षानुसार चिकित्सा में डॉ. विजयसिंह घोड़ावत पूर्ण जागरूकता के साथ अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। डॉ. घोड़ावत की सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। मंगलम चिकित्सालय के पूरे प्रबंधन एवं डॉक्टरों व नर्सिंग स्टाफ की पूरी टीम के सहयोग एवं सेवाओं हेतु हार्दिक आभार।

मैं उपर्युक्त सभी तथा ज्ञात–अज्ञात रूप से अनेक रूपों में सहयोगी समस्त महानुभावों एवं संपूर्ण श्रावक – श्राविका समाज को हार्दिक धन्यवाद देता हूं, कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं एवं आशा करता हूं कि जैन विश्व भारती को आप सबका सक्रिय सहयोग, सद्भावना एवं मार्गदर्शन निरन्तर मिलता रहेगा।

मैं उपर्युक्त सभी तथा ज्ञात–अज्ञात रूप से अनेक रूपों में सहयोगी समस्त महानुभावों एवं संपूर्ण श्रावक–श्राविका समाज को हार्दिक धन्यवाद देता हूं, कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं एवं आशा करता हूं कि जैन विश्व भारती को आप सबका सक्रिय सहयोग, सद्भावना एवं मार्गदर्शन निरन्तर मिलता रहेगा।

आप सभी के प्रति हार्दिक मंगलकामनाओं के साथ–

ओम अर्हम्

राजेश कोठारी
मंत्री

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : + 91-1581-226025 / 226080

ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com ■ वेबसाईट : www.jvbharati.org

जैन विश्व भारती

मानवीय मूल्यों को समर्पित संस्था

प्रमुख गतिविधियां : एक नजर

शिक्षा :

- जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
- विमल विद्या विहार सीनियर सैकण्डरी स्कूल
- महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर
- महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर
- जैन विद्या अध्ययन अध्यापन, प्रचार प्रसार
- आगम मंथन प्रतियोगिता
- जीवन विज्ञान

सेवा :

- सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला
- श्रीमद् आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र, बीदासर
- स्व. माणकचन्द मनोहरी देवी दूगड़ आयुर्वेद चिकित्सालय, बीदासर
- विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा केन्द्र
- समणी केन्द्र व्यवस्था

साहित्य :

- प्रकाशन एवं वितरण
- ऑन लाइन साहित्य विक्रय केन्द्र
- वेब पोर्टल पर साहित्य की उपलब्धता

समन्वय :

- पुरस्कार एवं सम्मान
- विदेशों में प्रचार–प्रसार

संस्कृति :

- तुलसी कला दीर्घा (आर्ट गैलेरी)

शोध :

- आगम प्रकाशन
- हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपियों की सुरक्षा एवं संरक्षण

साधना :

- प्रेक्षाध्यान
- प्रेक्षाध्यान पत्रिका

उक्त सभी गतिविधियों में जैन विश्व भारती के समस्त सदस्यों की सहभागिता एवं सहयोग हेतु सादर निवेदन

जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन : + 91-1581-226080/224671
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com • वेबसाईट : www.jvbharati.org